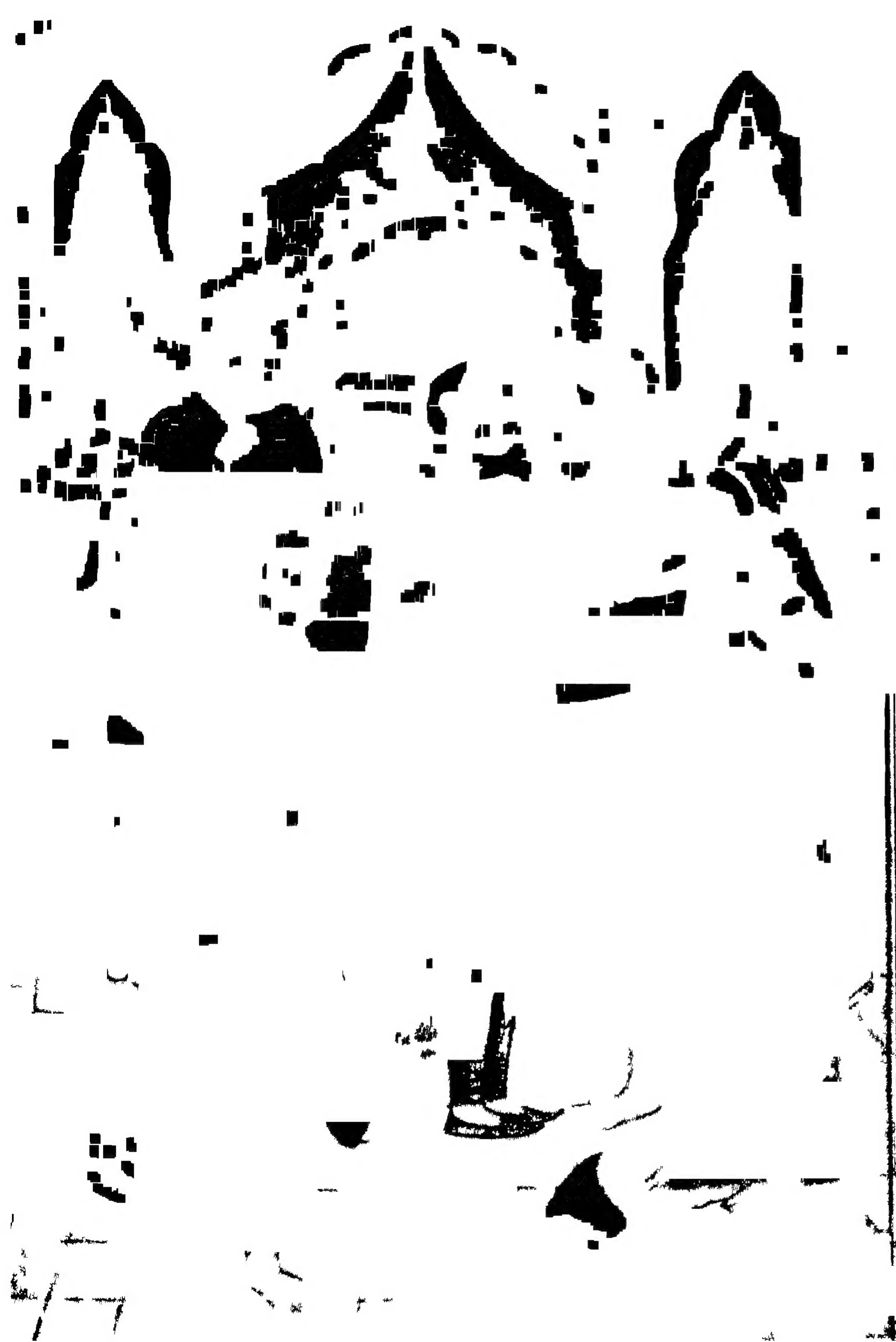
द्वारा





शाही लकड़हारा नाटक

बाबू शिवव्रत लाल वर्मन एम० ए० के शिक्षाप्रद

उपन्यास के आधार पर

लेखक

कुलभास्कर "जन्नत"

प्रकाशक

तीप्रसाद गुप्त

नेशनल बुकडिपो नई-सड़क देहली.

[तृतीयबार]   अकतूबर सन् १९२५ ई०   [मूल्य ॥)

प्रकाशकः—

ज्योती प्रसाद गुप्त

नेशनल बुकडिपो नई सड़क

देहली

मुद्रकः—

हिन्दुस्तान इलेकट्रिक

प्रिंटिंग वर्कस-देहली।


उपहार

शाही लकड़हारा

(नाटक)

मंगला चरण

(बालाओं का ईश्वर स्तुति करते नजर आना)

गाना

दाता है नाम तेरो प्यारो है तू दाता सब ही का,
तेरा ही रटत नाम सब तू ही है जग पालन हार,
न पाया, न पाया, तेरा सानी जग करतार,
दाता है

(सोरठा)

जेहि सुमिरत सिधि होइ, गणनायक करिवर वदन,
करहु अनुग्रह सोइ, बुद्धि राशि शुभ गुण सदन।
मूक होंहि बाचाल, पगु चढ़ै गिरिवर गहन,
जासु कृपासु दयाल, द्रवौ सकल कलि मल दहन।
नील सरोरुह श्याम, तरुण अरुण वारिज नयन,
करहु सो मम उर धाम, सदा छीर सागर शयन,

अंक १ दृश्य १

महाराज जोधपुर का दरबार

सहेलियों का गाना

गुइयां सइयां सारियां मिलजुल कर नाचें,
तारे तातारे तानूम छूम छूम नानाना छूम छूम।
बांधो समां, दुश्मन की क्षय हो, महाराजा की जय हो,
कुल आलम में रोशन हो इनका नाम,
सुख भोगें हर एक किस्म का मदाम,
पूरन प्यारे के सारे काम,
दुआ हमारी है यह सुबह शाम। गुइयां०

राजा—मन्त्रीजी! प्रजा की कैसी अवस्था है, राज-कर्मचारियों की ओर से कुछ अत्याचार तो नहीं हो रहा है, मैं मालूम करना चाहता हूं कि क्या प्रत्येक मनुष्य अपने अपने काम में लवलीन हो रहा है?

मंत्री—अन्नदाता महाराज की जय हो! आपके राज्यमें प्रत्येक मनुष्य श्रीमहाराज के धन, आयु की वृद्धि के लिये आशीर्वाद दे रहा है, और सुख की नींद सो रहा है—

हैं सदा सुख से सुखी सब अपने अपने काजमें,
दोस्ती है शेर की बकरी से, तेरे राज में।

राजा—कहिये सेनापतिजी! आपकी सेना का क्या हाल है?

सेनापति—श्री हुज़ूर के चरणों के प्रताप से सदा जय हो जय है:—

छुपाता चांद है मुख को तेरे इकबाल के आगे,
कभी दुश्मन का वश चलता नहीं है कालके आगे।
वही शानो शौकते दरबार शाही तेरी हरदम है,
झुकाया सिर है देवों ने तेरे इकबाल के आगे।

राजा—राजा का धर्म है कि अपनी प्रजा का पुत्रसम पालन करे, धर्मराज की तरह राज्य का शासन करे। क्यों खजानची जी! आप का क्या विचार है?

खजानची—सत्य वचन महाराज! इसी को नाम तो परोपकार है।

राजा—क्यों मन्त्री जी! इस वर्ष वर्षा न होने के कारण जो विचारे किसानों ने लगान की माफी की दरख्वास्त की थी, उसपर क्या हुक्म दिया?

मन्त्री—महाराज की आज्ञानुसार उनपर एक फसल का लगान माफ कर दिया गया है।

राजा—आपने बहुत अच्छा किया, क्योंकि राजा का असली खजाना तो यही किसान है, अबकी दफा वर्षा न होने के कारण ग़रीब बहुत हैरान है। क्यों खज़ानची जी आपका क्या विचार है?

खजानची—सत्य वचन महाराज, इसी का नाम तो परोपकार है।

अन्दरसे एक शब्द— फरियाद है, फरियाद है, महाराजाधिराज की दुहाई है।

राजा—यह कैसी फरियाद है, कैसी दुहाई है, किस पर बेदाद है? चोबदार तत्काल बाहर जा और फरियादी को दरबार में लेकर आ।

चोबदार—जो आज्ञा। (गया)

राजा—जो मैं हूं वह मेरी प्रजा, राजा क्या है प्रजा का बनाया हुआ रक्षक, नाथ के होते हुए अनाथ की भांति मेरी प्रजा पर अत्याचार हो, मेरे जीवन पर धिक्कार हो। क्यों खजानची जी आपका क्या विचार है?

ख०—सत्यवचन महाराज! इसीका नाम तो परोपकार है।

[चोबदार का एक तेली और सेठ सहित प्रवेश]

मन्त्री—क्यों तू ही फरियाद का शोर मचा रहा था?

तेली—हां श्रीमान! मैं ही बेताली ध्रुपद गा रहा था।

राजा—क्यों तुझ पर क्या बेदाद है, क्या फरियाद है?

तेली—अन्नदाता की जय! महाराज मैंने तेलके व्योपारसे कौडी कौडी पैसा २ इकट्ठा करके तीन हजार की रकम एकत्र की थी और इन सेठसाहिबके पास अमानत रखी थी। महाराज! तीर्थ यात्रा को जाते समय रुपया वापस करने का इकरार था, किन्तु सेठजी ने अब रुपया वापस देनेसे इन्कार कर दिया, महाराज को दुहाई है मैं लुट गया, मेरा तीर्थ यात्रा का विचार भी मिटगया।

राजा - क्यों खजानची जी आपका क्या विचार है ?

ख़जा०—सत्य वचन महाराज ! इसीका नाम तो परोपकार है।

राजा—परोपकार है या घोर अत्याचार है, क्यों सेठजी आप क्या कहते है ?

सेठ— राधेकृष्ण,महाराज राधेकृष्ण, मुझसे और ऐसा विश्वासघात,भला कहां मैं और कहां यह बात ' महाराज, इसने मेरा खान पान आदि सब मुश्किल करदिया है, कभी कोतवाल साहिब से फरियाद है, कभी दीवान साहिबकी याद है,महाराज दीवान साहिबकी कचहरी में मैं निरापराध हूं और यह मिथ्यावादी, इसका निर्णय हो चुका है।

राजा—(स्वतः) यह बात कुछ समझ में नहीं आती, कि इतना बडा सेठ और कुल तीन हजार की रकम पर धर्म हारेगा,मगर यह बात भी कुछ समझमें नहीं आती कि एक तेली का यह साहस कि सेठ जी पर झूठा इलजाम लगाये, (मन्त्रीसे) मन्त्रीजी ! आप सेठ साहिब की तिजोरी मगाइये, सेठजी आप बैठ जाइये।

मन्त्री—जो आज्ञा। (गया)

सेठ—अन्नदाता महाराज ! यों तो मेरा धन राज का धन है, किंतु मेरी तिजोरी को दरबार में मंगाने का कारण तो बताइये ?

राजा-सेठजी ! यह अदालती कार्रवाई है, रुपये को व्याजपर

चलाना नहीं है, एक २ के दो २ बनाना नहीं है—

राज शासन में शुब्हा सब आपका बेकार है,
राज कारज के लिये भी बुद्धि की दर्कार है।
जान लेना ईश के भेदों का आसां है मगर,
रास्ता शासन का इससे भी कहीं दुश्वार है।

मन्त्री—श्री महाराज! तिजोरी हाजिर है।

(तिजोरी लाई गई)

राजा—अच्छा मन्त्री जी! एक लगन पानी मगाइये।

दीवान—जो आज्ञा।

[पानी लाया गया, राजा तिजोरी से रुपया निकाल कर पानी में डालते है, और ध्यान पूर्वक देखते है]

राजा—सेठ साहिब! आप इस गरीब का रुपया देदें।

सेठ—अन्नदाता! जो आज्ञा, परन्तु मेरे पास इसकी कोई अमानत नहीं है।

राजा—आप इस बातको मानिये, यदि रुपये पर घी या कोई और चिकनाई लगा कर पानी में डाला जाये तो चिकनाहट पानी पर अवश्य आयेगी।

सेठ—महाराज बिल्कुल सत्य वचन।

राजा—यदि तेली का रुपया तिजोरी में हो तो चिकनाई जरूर पानी पर आयेगी, और तेली होने के कारण उसके धन को जरूर तेलके हाथ लगे होंगे।

सेठ—महाराज अवश्य।

राजा—अच्छा आओ तो देखो।

[पानी दिखाया जाता है, चिकनाई ऊपर आती है, सेठ घबराता है, सेनापति तलवार नगी करता है, तेली रोकता है।] [टेबेला]

अंक १ दृश्य २

अगला महल

[सहेलियों का गाते हुये प्रवेश]

गाना

आओ गुइयां मिलजायें वारी,
झूम झूम झा ना ना ना नाचे सारी,
पाया है कैसा खुशी का ज़माना,
आना आना गाना बजाना,
पाई हैं हमने मुरादें प्यारी,
आओ गुइयां ......

प्रेमलता—बहिन कामिनी! मुझे तो इस राज मन्दिर को [illegible] की याद दिलाती है।

कामिनी—भला बहन! तुम्हें इस राज मन्दिर की शोभा किस बात की याद दिलाती है ?

प्रेम— पल क्षण बातें हों प्रेमकी प्रफुल्लित हो गात,
हृदय से कोई लगायके करे प्रेम की घात।

गुलाब—वाहरी मोटा ढीठ! तेरी तो वही मिसल है—
"शकल चुडेलों की मिजाज परियों के"

प्रेम०—बहन, कोसने काटने को तो रहने दो, जरा अपने हृदय पर हाथ रखकर देखलो।

गलाब— हर घडी हरदम हमें बस यह चलन भाता नहीं,
क्या अभी तक चुलबुलापन यह तेरा जाता नही।

प्रेम०—हां बहिन, मैं चुलबुली हूं, गर्ज जो कुछ कहो वह सच है, परन्तु तुम तो भौंरे की तरह कली २ का रस भी चूसती हो, और अलग भी रहती हो।

गुलाब—एक एक की सौ सौ कहे जाती हो, मैं चुप हूं और सुने जाती हूं।

प्रेम०—प्रेम का रस ही ऐसा रस है, जिसको चखने के बाद मनुष्य गूँगा हो जाता है।

(रानी का प्रवेश)

रानी—प्रेमलता! निःसदेह सारे ससार में प्रेम की दुहाई है, प्रेम ही प्राणियों का एक मात्र [illegible] ,प्रेमके सहारे कुल संसार है, विश्व के पशु पक्षियों के मनमें प्रेम का ही चमत्कार है। प्रेम ही नाव है और प्रेम ही उसकी

पलवार है, यहां तक कि परमात्मा भी प्रेम का आकार है, संसार के परमाणु परमाणु में प्रेमने अपना सिक्का जमाया है, परमात्मा के द्वार का मार्ग बनाना एक मात्र प्रेम के हिस्से में आया है—

प्रेम का नग़मा भरा है तन के हर एक तार में,
प्रेम के फंदे लगे हैं हर जगह संसार में।
प्रेममय है कुल जहां और कुल जहां में प्रेम है,
प्रेम है पत्थर में कमूल प्रेम के आकार में।
इसके बंधन में फँसी मजबूर होकर आत्मा,
भक्त के वश में हुए, है इससे ही परमात्मा।

गुलाब—महारानी जी! मेरा मतलब यह नहीं है, कि मैं प्रेम का तिरस्कार करती हूं बरन् मैं तो शुद्ध प्रेम को दिल से प्यार करती हूं।

प्रेम—तुम्हारा शुद्ध प्रेम से क्या मतलब है?

गु०—मेरा अभिप्राय आपसे विवाद करने का नहीं, अब इस प्रसंग को छोड़िये, फिर कभी इसे सविस्तार कहूंगी।

चोबदार—राजमन्दिर के कर्मचारियो सावधान ! महाराजा-धिराज की सवारी आती है।

[सहेलियों का जाना और राजा का आना

रानी—आज मेरे प्राणनाथ का मुख मलीन क्यों है—

चंद्र मुख पर आप के है कुछ घटा छाई हुई,
है कली मन की तुम्हारे आज मुर्झाई हुई।

राजा—(चुप)

रानी—स्वामी क्या आप दासी से कुछ रुष्ट हैं—

अवगुण को दासी के प्रभु दिल से बिसार दो,
मैंने कही हो एक तो दस दस हजार दो।

राजा—(चुप)

रानी—आश्चर्य स्वामी! आप अभी तक ख़ामोश हैं—

यह किसपे गुस्सा है बहरे खुदा खुदा के लिये,
बताओ किसने जफ़ा कर दिया खुदा के लिये।

राजा— गुजर गई जो मुसीबत गुजर गई मुझ पर,
न पूछ मुझ से मेरा माजरा खुदा के लिये।

रानी—कैसे शोक भरे वाक्य आपकी जबान से निकल रहे हैं, जिससे मेरे दिल पर आरे चल रहे हैं, (घुटने टेककर दामन पकड़ती है)

राजा—प्रिय (उठाकर दिलासा देता है)

रानी— बाइसे रजो अलम कुछ तो बताइये मुझको,
हाल अपनी आप बीती का सुनाइये मुझको।

राजा— दुश्मन जां यक बयक सारा जमाना हो गया,
हाय तासीरे मुहब्बत वह सितम क्या हो गया।
हमने जिनसे दोस्ती की वह हैं करते दुश्मनी,
देखो क्या सोचा था हमने और वहां क्या होगया।

रानी—स्वामी! मैं आपकी अर्धाङ्गनी हूं, जिस तरह से शरीर आपकी हर एक खुशीमें से हिस्सा पाता है, उसी तरह

मेरा दिल आपकी दुःख कथा सुनने के लिये व्याकुल हुआ जाता है।

राजा—वही होता है जो कुछ होनहार है, लक्ष्मी! तुम्हें इन बातों से क्या सरोकार है, सख़्त से सख़्त मिज़ाज स्त्री का दिलभी मोम की भांति नर्म होता है, मुसीबत की दहकती हुई भट्टी का ख़्वाब में भी ख़्याल करते थरथराती है, कांप जाती है।

रानी— रानी अहिल्याने भी औरत का जिगर पाया था,
राम सेवा से ही सीताने समर पाया था।
बिक गई तारामती अपने पति के हुक्म से,
पति सेवा का इन्हीं सबने अजर पाया था।
मोम का नहीं पत्थर का जिगर रखती हैं,
हुक्म खाविन्द से हमीं काट के सिर रखती हैं।

राजा—यदि नहीं मानती हो और मेरे दुःख में शरीक होना लाज़मी जानती हो तो सुनोः—

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग़ से,
इस घरको आग लग गई घरके चिराग़ से।

रानी—जिस कथा का आरम्भ इतना भयानक और डरावना है उसका परिणाम कैसा होगा?

रा०—परिणाम? बड़ा बुरा परिणाम, इस राज्य का इख़्तताम।

रानी—स्वामी! क्या होगा, क्या हम फ़क़ीर हो जायेंगे?

रा०—धीरे, धीरे, यदि राज्य की गाड़ी इन्हीं पहियों के सहारे

थोड़े दिनों और चलती रही।

रानी—तो फिर?

राजा—तो फिर गाडी रहेगी न गाडी वाला।

रानी—राज्य की गाडी के पहिये कौन?

राजा—इसके कर्मचारी, इसके हांकने वाले अर्थात् राजसभा के सभासद्।

रा०-यदि उनसे आपकी आज्ञाके प्रतिकूल अपना कर्तव्य पालन में आनाकानी साबित हुई है, तो उन्हे बदल डालिये, परन्तु महाराज! मुझे तो विश्वास नहीं आता।

राजा—किस बात का?

रानी—इस बात का कि तजुर्बेकार ठोकरें खायें, तैराक डूब जायें।

राजा—जुल्म, अत्याचार और अन्याय राज्य के पोदे के लिये वह दीमक है, जो अन्दर ही अन्दर इसके बीज को चाट जाती है, और इसकी बुनियाद को काट जाती है।

रानी—किंतु यह उत्पन्न हुई क्योंकर?

राजा—इनमें से हरएक का दारो मदार है खुशामद के असर पर, जहां खुशामद जहूर पिज़ोर होती है, वहां इरकान दौलत से उमूमन नाइंसाफी की तकसीर होती है।

रानी - इसका सुबूत?

राजा—बहुत आसान। चोबदार! चोबदार।

चोबदार—सरकार!

राजा—जाओ अभी जाओ, मत्री, सेनापति और खजानची को महलमें फौरन लेकर आओ।

(चोबदार शिर झुकाकर जाता है)

राजा—दूधसे पानी अलग किया जाता है, अभी शोधन हुआ जाता है, हा प्रिय किन्तु

रानी—महाराज आज्ञा ?

राजा—अगर तुम हार गई ?

रानी—तो मैं हार दूगी।

राजा—नहीं प्रिय हार तुम्हे मुबारिक रहे।

रानी—तो जो कुछ आप आज्ञा दे।

राजा—अगर मै हारा तो राज्य छोडकर बारह वर्ष तक वनमे गुजारू गा।

रानी—और यदि मैं हारी ?

राजा—तो तुम्हें भी बारह वर्षके लिये वनमे जाना होगा, जँगल ही तुम्हारा भी ठिकाना होगा।

रानी—शर्त बहुत कठिन है, किन्तु प्राणाधारकी खुशीकी खातिर सब कुछ मुम्किन है, बहुत अच्छा श्रीमान् ! यदि आपकी यही मरजी है तो यू ही सही –

रजा है जिसमे तेरी मैं उसीमे दिलसे राजी हू,
सरे तसलीम खम है जो मिजाजे यार मे आये।

(सिर झुकाती है राजा आलिङ्गन करता है)

चोबदार—महाराज ! दरबारी राज मन्दिरके द्वारपर उपस्थित है।

बताते हैं दिनका समा, इसमें भी कुछ भेद ही होगा।

राजा—दीवान साहिब! फरमाइये क्या मैं कुछ झूठ कह रहा हू?

दीवान—नही नही, अन्नदाता बिल्कुल ठीक है, सूरजकी गरमीसे जमीन भट्टीकी तरह तपती है, ईश्वर जाने आसमान पर उडने वाले पक्षियों की किस तरह कटती है।

रानी—(स्वगत) क्या कहा सूरज की गरमीसे जमीन भट्टी की तरह तपती है। स्वार्थसे अन्धे होकर राजा की हां में हा मिलाना, क्या दीवान ने चापलूसी ही मे अपना भला जाना।

राजा—बेशक २ धूप नही बल्कि आग बरसती है।

रानी—खुशामद खोर इन्सान के लिये नरक की आग दहकती है।

राजा—मेरा तो प्यासके मारे दम खुश्क हुआ जाता है, कहिये सेनापति जी आपका साहस क्या कहना है? उफ, ओह, धूप है या परमात्मा का कहर, या नरक के कुण्ड की एक जलती हुई लहर!

सेनापति—(स्वगत) परमात्मा कैसी मुश्किल आई है, यदि दीवान साहिबके विरुद्ध जबान खोलता हू, तो नौकरी जाती है, और झूठ बोलता हू तो अब मेरी भी शामत आती है।

राजा—मेरा ख्याल है कि आप भी

सेनापति—हा महाराज मैं भी दीवान साहिबका हम ख्याल हू।

खजानची—(स्वत)—

जाहिद कहता था जान है दीन पर कुरबान,
पर आया जब इम्तिहान की जद पर ईमान।
की अर्ज किसीने कहिये अब क्या है सलाह,
फरमाया कि भाई जी है तो जहान।

(प्रगट) बेशक महाराज ! गजब की आग बरस रही है।

रानी—(स्वत) इस कद्र झूठ, यह रियाकारी ?

राजा—खुशामदके गुलाम दौलतके बन्दो ! शर्म करो, क्य राजाकी हा मे हा मिलाना, रातको दिन बताना, परमा को छोडकर स्वार्थके रास्ते पर जाना, बस इसी तुमने अपना भला माना ?—

लदा था बोझ शासनका तुम्ही लोगोके कन्धोपर,
भरोसा रहबरी का किस तरह हो तुम ऐसे अन्धोपर।

दीवान—सरकार

राजा—बस खबरदार, मुझे यह देखकर जनून होता है, कि रक्षकोके हाथ गरीब भेडों का खून होता है —

दोस्तीसे राजकी जड को तुम्हीने काट डाला है,
हमने मरनेके लिये ही आस्ती मे साप पाला है।

सेनापति--हुजूर

राजा--चुप रह पुर कुसूर, जो न करना था किया, जहा ठण्ड थी वहा आग बरसादी, नखल आर्जू की शाख सर सब व शादाब थी, तुमने अपनी करतूतोसे खाकमे मिलादी—

है दवाई इस शजरके वास्ते ताजा खिजा,

पत्ते नुच कर रह गईं खाली सरस की तीलिया।

दीवान—अफसोस !

राजा—अब अफसोस से क्या फायदा—

कब कहते हैं हम कि हम से कोई वफा करे,
हम सब मे खुश है कोई वफा या जफा करे।

सेनापति—अन्नदाता !

राजा—अपने मतलब के लिये निराश्रय प्रजा के गले पर अन्याय की छुरी चलाना, कही लगाना, और कही बुझाना ? निकल जाओ, दूर हो, काला मु ह करो, अगर गैरतदार हो तो कभी मु ह न दिखाना, वरना —

बाहिर म्यान से हुई जो तेग जौहर फिशा,
बाकी रहेगा तू न तेरी खाक का निशा।

(थोडी देर इन्तजार के बाद) अभी तक मौजूद हो, बेगैरतो ! दफा हो, निकल जाओ, चुल्लू भर पानी मे डूबकर मर जाओ।

दीवान—निकलना खुल्दसे आदम का सुनते आये थे लेकिन,
बहुत बे आबरू होकर तेरे कूचे से हम निकले।

(तीनों गये)

रानी—प्राणनाथ ! अब क्या होगा ?

राजा—तुम्हे बारह वर्ष के लिये बनवास।

रानी—क्या स्वामी आप इस कदर कठोर हो जायगे, कि बिना अपराध दासी को जंगल में रहने का हुक्म सुनायेंगे ?

राजा—बेशक, चुटकी से निकला हुआ तीर और निकली हुई बात कभी वापस नही आती, समय जाता है और बात रह जाती है।

रानी—स्वामी! सती स्त्री के लिये अपने पति का चन्द्रमुख बगैर जिन्दा रहना मुहाल है।

राजा—मेरे प्रण को कोई तोड़े किसकी मजाल है।

रानी—मुझे निराश न बनाइये।

राजा—बस बारह वर्ष के लिये जंगल को जाइये।

रानी—यह अपराध क्षमा के योग्य है।

राजा—असम्भव है।

रानी—दया करो।

राजा—हया करो।

रानी—एक बार क्षमा करो।

राजा—अपनी शर्त को वफा करो।

रानी—तो क्या महरूमी?

राजा—किस्मत की शूमी।

रानी—महाराज मैं गर्भवती हूं, और भविष्य मे राज्य की आशायें मेरी आशा पर अवलम्बित हैं।

राजा—कुछ भी हो, तुम्हें बारह वर्ष के लिये जंगल जाना अपने बचनको निभाना होगा। चोबदार! चोबदार!!

चोबदार—सरकार!

राजा—जाओ रथ तैयार कराओ, प्यारी रुख्सत, स्त्री जाति

नाम को चमकाओ, ससार को दूसरी सीता बन कर दिखाओ, स्त्री जाति के नाम के डूबते हुये सितारे को अपनी सत्यता से बचाओ, और ससार को दिखा दो कि स्त्री एक गुप्त शक्ति है, स्त्री राख मे छुपी हुई एक चिगारी है, जो गैरत की हवा के एक झोके से प्रज्वलित होकर दहती हुई भट्टी बन सकती है —

(दोहा)

अद्भुत शक्ति है यही नाही याको पार,
कारज या संसार में कीजै सीता सार।

चौबोला

कीजै सीता सार कि जग मे नाम तुम्हारा होवे।
स्त्री कुल दीपक बनो जगत उजाला होवे॥
उल्टा कारज न करो, जो नाम बुरा होवे।
सत्यता जैसी वस्तु को हाथ से नही खोवे॥

(गया)

चोबदार-रथ हाजिर है सरकार।

रानी— रे मन ! चल और पति की आज्ञानुसार बारह वर्ष जगल मे गुजार।

गाना।

विधि का लिखा को टालन हारा,
आज्ञा पिया की, धीरैं जियैं की,
पीर हिया की, है मोरा सहारा।

शेर— तसव्वुर मे मैं रो रो कर गुजारूगी मुसीबत को,
न ठहराऊंगी मुल्ज़िम मै पति की पर मुहब्बत को।
गिला है कुछ मुकद्दर से न शिकवा चर्ख से अपना,
शिकायत से पति की मैं गवाऊगी न 'जन्नत' को।
यह मुहब्बत मेरी, यही चाहत मेरी,
यही 'जन्नत' मेरी।

शेर— मुझको मतलब है न राहत से गर्ज दुनिया से,
काम अदना से न कुछ आला से।
मेरे तो पिया का नाम अधारा।
विधि का लिखा को मेटन हारा। (प्रस्थान

अंक १ दृश्य ३

लोभीलाल का मकान।

(लोभीलाल का प्रवेश)

लोभीलाल—यारो अगर दुनिया मे कुछ काम है तो दौलत समेटना ही सबसे बड़ा काम है। दुनिया में आने का मतलब दौलत की समेट है, वर्ना जिन्दगानी विन्दगानी कुछ नही सारी अलसेट है। जहा देखो, जिस जगह नजर करो ईश्वर नही बल्कि लक्ष्मी की माया है, यदि विष्णु भगवान के पाव दबाती है तो लक्ष्मी, यदि परमेश्वर से मिलाती है तो लक्ष्मी, यदि देवताओं पर काबू दिलाती

है तो लक्ष्मी, यदि खून कराती है तो लक्ष्मी, यदि जीवन दिलाती है तो लक्ष्मी, यदि मुकद्दमा जिताती है तो लक्ष्मी, गर्ज रेल मे, मेल मे, जेल मे लक्ष्मी, कचहरी मे दरबार में सरकार मे लक्ष्मी, दर मे दीवार मे व्योपार मे लक्ष्मी, सारे ब्रह्माड मे लक्ष्मी ही लक्ष्मी छाई हुई है, अगर मैं झूठ बोलता हू तो यारो दिल पर हाथ रखकर देख लो, तुम्हारे दिल में इसकी किस कदर मुहब्बत है —

रजाई है न तकिया है बिछोना है न चादर है,
न सर्वेंट है न वर्वेंट है न वाइफ है न मादर है।
अगर कुछ है तो दुनिया मे सिर्फ यारो यह दौलत है,
हमे भाई से भी बढकर यही भाई बिरादर है।

[लोभीलाल के सुपुत्र चन्दू का प्रवेश]

चन्दू—' ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया '

लोभी—क्योंरे अभी तक तू चटसाल नहीं गया ?

चन्दू—नही जी मैं आज से नही पढने का।

लोभी—क्यो ?

चन्दू—चटसाल वाला, मेरा साला, मुझे मारता है, लडको के कान पकड पकड कर उखाडता है, 'ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया' बाबा देखो एक वक्त मे एक ही काम हो सकता है।

लोभी—बराबर है, बराबर है।

चन्दू—तो बस कल से पढ मैं आया करूंगा और मार तुम खा,

आया करो ।

लोभी—क्यो ?

चन्दू—जबान मेरी और कान तुम्हारे, , ठुमक चलत अररररर वह कसाई अपनी तीन फिट की लम्बी छुरी लिये इधर ही आरहा है। (लोभीलाल के आस पास चक्कर लगाता है) हाय हाय, वह आरहा है, मेरा तो प्राण ही निकला जा रह है। बाबा ! अरे ओ बाबा ! ! (रोता है) मुझे कही छुपाओ ।

लोभी—अरे कौन आरहा है, तू इतना क्यो घबरा रहा है ?

चन्दू—पण्डित, वही लडको का कसाई, अब तो बडी शामत आई, जन्म जन्म के बदले निकालेगा, मुझे तो मार ही डालेगा।

लोभी—मार डालेगा, क्यों मार डालेगा आखिर किस बात पर ?

चन्दू—आज मैं ने एक चटसाल के लडके पर पत्थर मारा, और उसका सिर फट गया बस इतनी सी बात पर ।

लोभी—मेरा लाल, मेरा बेटा, तू सामने वाली कोठरी मे छुप जा । (लडका छुप जाता है) वाह अच्छे आये पण्डित मेरे लडके को मारने वाले ।

पण्डित—लाला लोभीलाल आशीर्वाद ।

लोभी—पालागन महाराज ! कहिये कैसे आना हुआ ?

पण्डित – क्या कहू आपके लडके ने तमाम चटसाल को हैरान कर दिया है, हमारा तो नाक मे दम आ गया ।

लोभी—नाक मे दम आ गया, दम ? राधेकृष्ण महाराज ! अभी

तो वह बच्चा है, मगर अब आप का मतलब क्या है ?

पंडित—बस उसी को पकडने आया हू।

लोभी–पकडने आये हो ? राधेकृष्ण पण्डितजी ! वह तो नादान है, घडी में शत्रु घडी में मित्र, उसकी जबान पर न जाइये, आप अपना काम बनाइये।

पंडित—बुलाइये, बुलाइये, अपने लडके को बाहर बुलाइये।

लोभी—तो क्या आप उसे मारेंगे ?

पडित—हा मारेंगे, मार मार कर हम ही सुधारेंगे।

लोभी—जाओ जाओ, हजामत बनवाकर आओ, मारेंगे ? यही तो मार मार कर सुधारेंगे ? शक्ल देखो तो लगूर, अक्ल न शऊर।

पडित—बस तो लाला जी आप के लाल पढ चुके।

लोभी—न पढेगा तो न सही, हमे पढाकर क्या रेल का टिकट कलक्टर बनाना है या ट्रामगाडी का कडक्टर, या म्युनिसपालिटीका इन्सपेक्टर ? यदि अपनी खैर चाहते हो तो रास्ता नापो, वरना वह पसेरी की मार लगाऊंगा कि मनका ढल जाये।

[लोभीलाल डराता है पण्डित डरसे भाग जाता है]

चन्दू—(निकलकर) " ठुमक चलत " बाबा तुमने बहुत अच्छा किया, जो पण्डित को मार मार कर यहा से निकाल दिया, " ठुमक चलत

लोभी—मेरी आखो का तारा, मेरे जीवन का सहारा, अगर एक

पण्डित चला गया तो वैसे बीस आ सकते हैं।

चन्दू—बीस, अरे बापरे इतने बहुत से ? नही बाबा ! जब तो मुझे उस एक के पास ही जाने दो, एक ही की मार खाने दो।

लोभी—कैसा नादान है अरे पचास चटसाल खुलवादू ।

चन्दू—नही बाबा, एक भी नही, अगर पचास चटसाल खुल-वाओगे, तो यह पण्डित लोग लडकों को सतायेंगे और लडके तुम्हे हत्यारा बतायेगे।

लोभी—मेरा भोला भाला नाजो का पाला।

चन्दू—हा बाबा • "ठुमक चलत "

लोभी—मगर तुझे कुछ न कुछ तो पढना ही होगा।

चन्दू—यह क्यो ?

लोभी—दूकान का व्योपार देखने भालने के वास्ते।

चन्दू—इससे क्या होगा ?

लोभी— दौलत मिलेगी दौलत ।

चन्दू-दौलत, अच्छा फिर क्या होगा ?

लोभी—फिर तेरा व्याह करू गा।

चन्दू-मेरा व्याह 'ठुमक चलत ' ऐसी ऐसी बातें अच्छी लगती हैं

लोभी—हा तेरा व्याह होगा तू घोडी चढेगा, सब को खाना खिलाऊ गा, बिरादरी मे बडा नाम होगा।

चन्दू—मेरा व्याह कब होगा ?

लोभी—जब तू बारह वर्ष का होगा।

चन्दू—मैं बारह वर्ष का कब होऊंगा ?

लोभी—जब तेरी माँ कहेगी।

चन्दू—यह कौन सी बाड़ी बात है मैं अभी कहलवा दूंगा। तुम मेरा व्याह कर दो।

लोभी—अभी नहीं।

चन्दू—नहीं जी अभी, जल्दी चलो आओ, मुझे अच्छे अच्छे वस्त्र पहनाओ, तुम दुल्हिन बन जाओ, अम्मॉ से कहूंगा व्याह कर आया हूं, और छोटी सी बन्नो व्याह कर लाया हूं।

लोभी—परेशान कर दिया, चल हट।

चन्दू—बाबा, बाबा, थोड़ा झुको तो, जरा जल्दी करो।

लोभी—यह क्यो ?

च०—तुम्हें घोड़ा बनाऊंगा, चाबुक लगाऊंगा, समझ लो कि व्याह कराने जाता हूं।

लोभी—मसखरी करता है गधा।

च०—(रोता है) ऊ ऊ ऊ।

लोभी—अच्छा हमारे बाप, सवार हो जा, रो मत।

च०—(लोभी की पीठ पर सवार होकर) मेरा घोड़ा खाता है बिल्ली, जाता है दिल्ली, मेरा घोड़ा खाता है पावर, जाता है पिशावर, मेरा घोड़ा खाता है घास, जाय इसका सत्यानाश। (मारता है)

लोभी—अररर तू तो मारता है।

च०—क्यों, क्यों, बाबा घोडे को सभी मारते है ।

(लोनी लडके को फेक देता है, चोट लगती है, लडका रोता है, लोभीलाल की स्त्री दाखिल होती है और लोभीलाल को मारती है ।)

स्त्री—कमम्बख्त तेरा सत्यानाश हो, मनहूस, मेरे लडके को मार मार कर अधमरा कर दिया, अगर मे थोडी देर और न आती तो ईश्वर जाने क्या गजब ढाता, सत्यानाशी, तेरे हाथ ही टूटे, तेरी आखे फूटे, न रो न रो मेरे लाल मेरे बच्चे !

(लडके को ले गई)

लोभा—हात तेरी किस्मत की दुम मे नमदा ।

गाना ।

दुख से हुआ हू मै दुखी, प्राण पर यह कैसी बनी,
पिटे है पुत्र से पिता, देखा तुमने है कहीं ।
कैसा है अन्धेर, कैसा है यह फेर, हायरे नसीब हाय,
है नारी ये घर में एक चुडैल अधिक है यह पुत्र,
लगाये घर को आग हम नाक में है दम ।

(प्रस्थान)

अंक १ दृश्य ४

द्वार वाला मकान

(रायसिह का जालिमसिह के साथ प्रवेश)

जालिमसिह—नही, नही, मुझे निराश न बनाओ, प्रेम के प्रकाश को तिरस्कार के जल से न बुझाओ —



गुनाह गो मेरे बेहद हैं मुझे परवाह नही लेकिन,
मुझे बेइन्तिहा उम्मेद है तेरी ही रहमत से।

रायसिंह–छोडदे मेरा दामन छोडदे। तू और बेला से शादी का अरमान, एक गधा और सोने का पालान?

जालिम०–कहना मानो, दिल की लगी बुरी होती है।

राय०––मुहब्बत जाहिर मे अच्छी मगर अन्दर से छुरी होती है।

जालिम—कुछ तो रहम खाओ।

राय०—मैं हुक्म देता हू कि तुम यहा से निकल जाओ।

जालिम–तो क्या बिल्कुल निराश हो जाऊ?

राय०––बेशक।

जालिम०––तो फिर चला जाऊ?

राय०—फौरन।

जालिम––फिर सोच लीजिये, गौर कीजिये।

राय०––क्षत्री कुल को कलक लगाने वाले चोर! जिस के बाप दादो को रोटी के टुकडो से पाला, जिसने डाकू बन कर राज्य को तहो बाला कर डाला, उसको रायसिंह की कन्या से विवाह का अरमान, खुदा की शान? यदि तुम नही चाहते कि यहा से बेइज्जती के साथ निकाल दिये जाओ, तो तुरन्त चलते फिरते नजर आओ।

(जाना चाहता है)

जालिम० कुछ और सुनते जाइये।

राय०––एक शब्द भी नही। (गया)

जालिम०—अफसोस——

उलझे हुये प्रेम के फन्दों मे राम थे,
उलझन मे इस प्रेमकी हर वक्त श्याम थे।
बधन में इस प्रेम की कुल कायनात है,
सारे ऋषि मुनी भी इसी के गुलाम थे।

हा प्रेम! तेरा बुरा हो, कौन जानता था कि राजपूताने के शूरवीर क्षत्री शिरोमणि ठाकुर जालिमसिह की दरख्वास्त शादी को रायसिंह यह कह कर वापिस कर देगा कि तू नीचकुल मे उत्पन्न है बेला का पाणि ग्रहण नही कर सकता, किन्तु मैं इस अहकार का उत्तर तिरस्कार में दूंगा और दुश्मनी का जहूर दोस्ती मे होगा। यदि बेला का विवाह किसी राजकुवर के बदले एक भिखारीसे न करादू तो जालिमसिह नाम नही। विजय! विजय!!

विजयसिंह—कौन? श्रीमान् महाराज जालिमसिह?

जालिम०—हा जालिमसिह, तुमने कुछ सुना?

विजय—क्या?

जालिम०—यह कि गूगा बोलने और लगडा पहाड पर चढने की कोशिश कर रहा है।

विजय०-फिर?

जालिम—ठाकुर रायसिह अपनी कन्या बेला का विवाह किसी राजकुवरसे करना चाहता है।

विजय०—फिर ?

जालिम—वह कहता है कि अपनी कन्या को नीच घराने मे नही दू गा ।

विजय-फिर ?

जालिम—इससे तो यह सिद्ध हुआ कि मैं नीच कुल मे उत्पन्न हू।

विजय—फिर ?

जालिम—फिर तेरा सिर ।

विजय—महाराज आप तो क्रोधित हो गये, यह कथा तो कई बार सुनी है, अब कोई नई कथा सुनाइये, नई ।

जालिम—बस यही —

सतीके गर डिगादो तुम किसी सूरत से सत्पन को,
तो कल आये इसी सूरत मेरे दिल को मेरे मनको ।
अनादर जिस तरह मेरा किया है नीच पापीने,
उतारो तुम अधमता के गढे मे मेरे दुश्मन को ।

विजय०—हा ठीक तो है रायसिंह ऐसे ही दण्डका अधिकारी है, कम्बख्त ठाकुर है या भिखारी है । अब के वर्षा न होने के कारण अन्न उत्पन्न न होने पर भी किसी किसान पर एक कौडी लगान माफ न किया ।

जालिम०—तो फिर तुम्हारा क्या विचार है ?

विजय—जरा सब्र करो मुझे सोच लेने दो ।

जालिम—सब्र हो मुझ से कठिन है सब्र की शक्ति नही,
अब बिना बदले के अग्नि बुझ कभी सकती नही ।

विजय—महाराज! धीरज धरो अनुरागसे उत्पन्न हुई चीज के दाम बढ जाते है —

न होगी आहुती जब तक अग्नि मे सब विचारो की,
निराशा ही निराशा है यह आशा हम विचारों की।

जालिम०—हृदयसे गर निराशा शब्द धो डालो तो आशा है,
फकत एक लफ्ज 'न' के भेद से आशा निराशा है।

विजय०—महाराज! ठहरिये, ठहरिये, मेरे विचार मे एक बात आती है।

जालिम—जल्दी बोल वह क्या तेरे दिल मे समाती है?

विजय०—जल्दी न कीजिये, अन्यथा आई हुई बात रपट जायेगी, फिर याद करनेपर भी पलटकर न आयेगी।

जालिम—अच्छा भाई जैसी तेरी मर्जी।

विजय०—हा हा हा हा हा हा हा आगये न सीधी राह पर, यह रास्ता पगडडी से होता हुआ उस बाग मे जाता है और वहा से रायसिहके महलमे।

जालिम०—जरा साफ साफ कहो उलझी हुई कथा से मेरा दिल उलझता है।

विजय०—सुनो, धमलू माली राजकुमारी बेला पर निगाह रखता है, शायद वह उससे विवाह की अभिलाषा करता है।

जालिम—फिर इससे तुम्हारा अभिप्राय?

विजय०—धमलूको राज कुवर बनाकर बेलाका विवाह उससे रचायेंगे।

जालिम—किन्तु रायसिंह पहचान न जायेगा ?

विजय०—धमलूको अच्छे अच्छे वस्त्र पहनायेगे, और रायसिंह को उल्लू बनाकर बेलाका विवाह रचायेगे।

जालिम—धमलूको क्या मिलेगा ?

विजय—बेला।

जालिम—और रायसिंह को ?

विजय०—अहंकारका बदली, तिरस्कारका उत्तर, कलंक का टीका।

जालिम—हमे ?

विजय-इन्तकाम (बदला)।

जालिम—चलो बस हो गया काम।

विजय—ठहरिये, सामनेसे पण्डित उजागरमल आ रहे हैं, जरा इनसे मुहूर्तका विचार करालें।

(पण्डित उजागरमलका प्रवेश)

प० उजागरमल—यजमान लोगोकी सदा जय हो, धर्ममूर्ति! अब तो आपके यहा से द्वादशीका सीधा तथा एकादशी के टके भी जाते रहे। महाराज हम तो आप के याचक हैं याचक।

विजय—कहो पण्डितजी किधर से आना हुआ और किधर का विचार है ?

पण्डित—मन्दिरमे भाग ठडाई पूजा पाठसे निवृत होकर सोचा कि जरा आपके यहा भी होता चलूं, सो यजमान

लोगोका जय हो !

ज़ालिम—पण्डितजी आपने ज्योतिष विद्या तो खूब पढी है, कहिये इसमे कुछ हमारी किस्मतका भी लिखा है ?

पण्डित—क्यों नही महाराज ! यदि आपके हृदय मे भक्ति मौजूद है, तो ज्योतिष में शक्ति मौजूद है -

बुराई या भलाई को यह फौरन ही बताता है,
इसी दर्पणमे मुख तकदीर का भी देख जाता हैं ।

विजय—अगर यह बात है तो वाह वा-

बुराई या भलाई क्या हमारे दिलमे आई है,
बताओ तो हमारे दिलमे इस दम क्या समाई है ।

पण्डित—(पत्रा देखकर)—

ग्रह उल्टे ही उल्टे हैं अजब नकशा है तारोका,
बिखरता क्यो है शीराज़ा खुद ही मेरे विचारोका ॥
कही जाना पडे चलना पडे झगडा है शादी का,
कुछ ऐसा ही नजर आता है फल मुझको सितारोका ।

विजय—हा महाराज आगे, आगे ।

पण्डित—कुछ देना न दिलाना, मुफ्त मे सिर फिराना, महाराज टका लो हाथ मे फिर स्वाद आये बात मे ।

विजय—महाराज ! यहा टको का क्या जिक्र है, हमे तो कामकी सिद्धि का फिक्र है ।

पण्डित—पैसा न धेला तो क्या पण्डित का भेजा मुफ्त का है, जो खाते जाओ और भोग लगाते जाओ । अजी टका लो

हाथ मे, फिर स्वाद आये बात मे।

विजय—पण्डित होकर परोपकार के फल से अज्ञानता, आश्चर्य की बात है।

पण्डित—परोपकार के घर निमत्रण नही है, जो फोकट मे पत्रा दिखाता फिरू, ग्रहो का फलाफल जताता फिरू ।

जालिम—यह रत्नजटित माला आप की भेट है, कृपा कर अब तो मुहूर्त बताइये, इस कार्य मे किस प्रकार सफलता होगी इसकी सूरत जताइये।

पण्डित—(कुछ गुन गुन करके) अहा हा हा हा !

जालिम—क्या हुआ ?

पण्डित—मिल गया, मिल गया महाराज मिल गया।

विजय—पण्डित जी क्या मिल गया ?

जालिम—जरा साफ साफ बतलाइये।

पण्डित—आपका प्रश्न मिल गया, यह आपका कार्य किसी नीच जाति के द्वारा होगा, इस काम मे वही आपका सहारा होगा।

[पंडित जाता है धमल्लू का प्रवेश]

धमल्लू—(स्वत) हात तेरी तकदीर की दुममे मोटा सा रस्सा, कभी इधर खैचा कभी उधर खेचा, मगर फिर भी सीधा न हुआ, तकदीर का लटका ——

हैं गरदने इन्सान मे तकदीर के रस्से,
मानिन्द चक्कियो के फिराते है फरिश्ते।

बेला को चमेली की मार्फत चिट्ठी भेजी, जबानी दशा बतलाई, किन्तु उस जालिम के दिल मे आया, मेरे हाल पर तरस न खाया, न खुद आई न बुलाया ।

जालिम—कहो यार क्या हाल है ?

धमलू—हाल, हाल क्या पूछते हो—

उनसे प्रीति लगाय के कल न पडत दिन रैन,
तिल तिल प्रीति बढायके अब लागे दु ख देन ।

विजय—तो तुझे बहुत कुछ लगी है ?

धमलू—क्या पूछते हो ———

कूक करू तो जग हंसे जगल हो जल जाये,
पापी जीयरा ना जले जामे कूक समाये ।

[रोता है]

ज़ालिम—अजब गधा है, मर्द होकर औरतो की तरह रोता है

धमलू—अगर मेरी सी लगी होती तो औरत मर्द का ह[illegible] मालूम होता ।

विजय—तेरे तमाम दु खो का इलाज हमारे पास मौजूद है ।

धमलू—तो भाई बताते क्यो नही ।

विजय—सुन किसी से कहना नही, कहने की बात नही, तुझे जोधपुर का राजकुमार बनायेगे और बेला से विवाह रचायेंगे, तमाम लाव लश्कर तेरे साथ रहेगा

जालिम—और हम भी तेरी अर्दली मे रहेगे ।

विजय—जो कुछ हम कहे वही करना, जरा भी इधर उधर न करना ।

धमल्लू—नही बिल्कुल नहीं ।

जालिम—आओ तो चलो । (गये) ट्रान्सफर

अंक १ दृश्य ५

जंगल

(लकडहारे का गाते हुये दिखाई देना)

गाना ।

दशा यह हाय कैसी बनी है मेरी तुम्ही हो
मालिक मेरे हे भगवन् !
तुम्ही हो माता, तुम्ही से नाता, तुम्हीं हो
पालक मेरे हे भगवन् !
तुम्ही ने भेजा है जग मे मुझको तुम्ही हो
रक्षक तुम्ही हो दाता,
खराबो खस्ता फिरे है जग मे तेरा यह
बालक मेरे हे भगवन् !
तुझ ही को रोशन है हाल मेरा तेरा ही
"जन्नत" को है सहारा,

जगत है तेरा जहा भी देखो तू ही है
व्यापक मेरे हे भगवन्!

हा, मेरी प्रारब्ध की नाव भी अजब तलातुम मे पडी ह
चर्ख कज रफतार की न जाने क्यो इस कदर नजर कडी है—
न सिर पे साया है बाप का ही नसीब मे है न गोद मा क
न भाई कोई न बहन न इसजा अजीब मुश्किल है मेरी जाकी
दुर्भाग्यवश यह भी नही मालूम कि किसकी औलाद ह
आबाद हू या बरबाद हू। पैदा हुआ तो जगल मे, परवरिश पा
तो जगल मे। भला हो उन ऋषि जी का जिन्होने मेरी दुखिय
मा को अपने आश्रम मे रखा, मुझे शिक्षा दी, पढाया, लिखाय
लेकिन चर्ख सितमगार को यह भी न भाया, उनका साया भ
सिरसे उठाया। मा का सहारा बाकी था, वह भी मुझ बदनसी
को छोडकर सिधारी, अब मैं हू और जगल की यह झाडी
सुबह शाम लकडिया छाटता हू, अपने फूटे दिन काटता ह
इन्हे बेच बेचकर अपना पेट पालता हू, पर शुक्र है परमात्मा का

राजी है हम उसी मे जिसमे तेरी रजा हो,
भूखे हो या अघाये आराम या जफा हो।

परन्तु रह रह कर ध्यान आता है कि मैं ने ऐसे कौन स
गुनाह किये हैं, जिनका यह फल मिल रहा है, खैर उसकी मज
मे किसी का चारा नही, सिवाय सब्र के साथ दिन काट लेने
दूसरा चारा नही—

शुक्र है सद शुक्र है परमात्मा का लाख बार,
साथ इज्जत के गुजर है ऐ मेरे परवर्दिगार।
हाल मे जैसे रखे बस ठीक है और खूब है,
है मुसीबत मुझको राहत करम है गर किर्दगार।

गाना।

दुनिया सारी समझोरे झूठी झूठा जग स सारा रे,
काया झूठी माया झूठी झूठा जग व्यापारा रे।
आराम मे जो राम को भूले तकलीफ मे वह डूबेगा,
हर दम तालिब हो तू हर का जपले यह चपारा रे।
धन दौलत और माल खजाना जोबन और जवानी रे,
आवत इतसे जावत उतको जैसे जल की धारा रे।

अंक १ दृश्य ६

दूकान का बाहरी भाग

लोभीलाल-दौलत ! दौलत !! बस दौलत !!! दौलत ही से दुनिया इज्जतमे है, राहत है, फुरसत है, जिसके पास दौलत है उसी का औज पर बख्त है, दौलत नही तो जिन्दगी कुछ भी नही है ——

दौलतही से इन्सान का है रुत्बये आला,
दौलत ही से मिलता है यां मर्तबा बाला।

दौलत ही से इन्सान को है जग मे उजाला,
दौलत ही बना देती है कारून का साला।

कुछ न पूछिये, आज कल हमारे भाग्य का सितारा भं सातवे आस्मान पर है, मेरा दिमाग भी हफ्त इकलीम की बाद शाहत के मन्सूबे बाध रहा है। यारो, तुम्हारे दिल मे खिचड पक रही होगी और सोचते होगे कि मुझे हो क्या गया है जुनून है या खफकान, साया है या मसान, लेकिन मै कभी न बताऊंगा, कि मेरे हाथ एक सोने की चिडिया लग गई है। लोग किस्सा और कहानियो मे सिर्फ कहा ही करते है, लेकिन मुझे तो सचमुच मिल ही गई है। परन्तु दु ख यह है कि वह दिन में केवल एक बार अण्डा चिरकती है। खैर जी यह भी काफी है लेकिन आज अभी तक वह अक्ल का अन्धा आया नही? आता ही होगा, उस मूर्ख से अधिक उल्लू कौन होगा, जिसे कील और चन्दन की पहचान नही, परन्तु इस मे हमारा क्या जाता है यह भी हमारे हक मे अच्छा है, अगर वह जान जायेगा, तब कब साधारण लकडी के बदले चन्दन हाथ आयेगा। ज्यो ज्यो उसके आने मे देरी होती है, मेरे कलेजे पर मानो साप लोट करते हैं, कही उसे किसी और ने तो नही गाठ लिया? नही जी आता ही होगा, यह मेरी मति का फेर है, यह लो वह आ गया (लकड हारे का प्रवेश) आओ आओ भाई, आज तो तुमने बड़ी देर लगाई?

लकड०—जी हा महाराज आज जरा देर हो गई, लीजिये कहाँ डाल दू ?

लोभी-उधर अन्दर उस कोठरी के भीतर डाल दे। (गया)

(जमादार का दो सिपाहियों सहित प्रवेश)

जमा०—क्यों ओ निर्धन कगाल ! तेरा क्या नाम है चडाल ?

लक०—नाम, नाम तो ईश्वर का है जिसने सकल ससार को रचा है, मैं तो गुम नाम हू, नाकाम हू, मुब्तिलाय आलाम हू —

मै कौन हू कहा हू खबर नही मुझे,
फिरती सबा लिये है कहीसे कही मुझे।

जमा०—तेरा बाप ?

लक०—वही जो भूखे को खाना खिलाना है, मुसीबनके वक्त जो सब के आडे आता है —

मेरा है बाप जिसने जगत यह सारा बनाया है,
जिधर देखो मेरे ही बाप की माया ही माया है।
वह हर वस्तुमे हरजा आत्मा बनकर समाया है,
मेरा वह बाप है यश जिसका वेदोने भी गाया है।

एक सिपाही—तेरी माता ?

लक०—पृथ्वी, यही वह चीज है जो मनुष्य का शरीर बनाती है, और अन्त समय धार्मिक अथवा अधर्मी भला अथवा बुरा देखे बगैर सब को अपनी गोद मे सुलाती है —

बडी इज्जत से अपनी गोद मे हमको सुलाती है,
फकीरो को अमीरो के बराबर मे लिटाती है।
मुसलमा हैं या हिन्दू हैं यहूदी याकि ईसाई,
बडी उल्फत मोहब्बतसे गले सबको लगाती है।

दूसरा सिपाही—तेरा मकान ?

लकड०—जगल बियाबान।

जमा०—हर सीधी बात का उल्टा जवाब ?

एक सिपाही—जैसे कोई बडा है नवाब।

लक०—मुझे गरीब जान कर जी चाहे जितना सतालो, उलटी सीधी जो कुछ मुह पर आये सुना लो।

सिपाही—बेवकूफ ' तुझे बिलकुल तमीज नही, कगाल आजकल दुनिया मे कोई चीज नही।

लक०—अगर ससार को नही तो क्या ईश्वर को भी कगाल अजीज नही —

सुनेगा बेकसो बरबाद की फरियाद को,
वह मिलादे खाकमे तुझको तेरी बेदाद को।

जमा०—क्या मजाल जो शेर भी हमारे सामने गरूर से सिर उठाये किसकी हिम्मत है कि हमारे विरुद्ध फरियाद के लिये जबान हिलाये—

दहन फरियादमे ताला लगे बेदाद का,
मैं मिटा दूगा जहासे लफ्ज ही फरियाद का।

लक०—बेकस व बरबाद का खून बहने को तो बह जाता है, मगर

कयामत के रोज कयामत ढाता है, और दुनिया के इति-
हास मे जालिम का नाम खूनी रोशनाई से लिखा जाता है।

जमा०–होश मे आ, जबान सभालकर कलाम कर।'

लक०–जालिम! जुल्म की तेग नियाम कर।

सिपा०–दुनिया मे रह और जीने का काम कर।

लक०–नेकी कमा और नेक काम कर।

सिपा०–अंजाम को सोच और हुज्जत तमाम कर।

जमादार–(हटर मारता हुआ) नाबकार, नाहिंजार, बे अदब, गुस्ताख!

लक०–मार डालो, मार डालो, अन्याई राजा के कर्मचारियो, दुराचारियो, जितना जी चाहे सितम ढालो, जितना जी चाहे सता लो मगर —

अब्र रहमत मे तलातुम जिस घडी होगा बपा,
हर तरफ छा जायेगी बख्शिश ही बख्शिश की घटा।
बे कसो की आह से हिल जाये पाया चर्ख का,
याद आयेगी तुम्हें महशर मे सब जोरो जफा।
हाथ जोडोगे हमारे ही, शिफा के वास्ते,
एक दिन शर्मिन्दा होगे तुम दुआके वास्ते।

जमा०–ऊ ह, दुआ के वास्ते, दुआ के वास्ते? डालो, डालो, इसके हथकड़ी डालो, कैदखाने की कोठरी मे ऐसे अच्छे अच्छे गीत गाना अपनी रागनी चक्कियो को सुनाना।

(जमादार तथा एक सिपाही चले जाते है, केवल एक सिपाही लक्डहारे को पकड़े हुए रह जाता है)

लक०-मगर भाई मै क्यो गिरिफ्तार किया जाता हूं, क्यो हवालात मे दिया जाता हू ?

सिपाही—इसलिये कि तू बेकुसूर है।

लक०—तो क्या बेकुसूर होना भी एक कुसूर है ?

सिपाही०—बेशक कुसूर है, इस ससार मे छल कपट और दगा के सिवा और है भी क्या ?

लक०—अफसोस !

सिपाही०—अफसोस की जरूरत नही, दुनिया की अवस्था पर अपना भी निर्भर है और यह अपनो के साथ बुराई सब पेट की खातिर है।

लक०—भाई यह क्यो कर ?

सिपाही—आलस्य के जुये मे आराम तलबी के पासो से कला कौशल, विद्या व्यापार की बाजी हारी, उस दिन से पेट भरने के भी लाले है –

जाहो हशमत लुट गई मक्रो रियासे,
ऐशो राहत मिट गई जोरो जफा से।

लक०—आप क्या करेगे ?

सिपाही०—भलो के साथ बुराई।

लक०—अब किस तरह बेडा पार हो ?

सिपाही—भेदभाव की नाव को यगानगत के बादबान लगा

कर एकता के समुद्र मे डालो और साहस तथा वीरता के चप्पू से खेकर दृढता का डाडा लगाते हुए, अत्याचार तथा दमन की विरोधक वायु से बचाकर, व्यापार और उन्नति के किनारे की तरफ परमात्मा के आश्रय पर छोड दो ।

लक०—फिर क्या होगा ?

सिपाही०—हमारा तुम्हारा ही नही वरन् समस्त संसारका भला।

लक०—किन्तु एक दुखित आत्मा को यो पकडने से फायदा ?

सिपाही—अन्याय तथा स्वार्थ का कायदा।

लक०—मुझे मेरा अपराध तो बता दो ?

सिपाही—हमे रानी जी की आज्ञा विवश करती है, हुक्म हुआ है कि सब से पहले जिस गरीब निर्धन को पाओ, तुरन्त गिरिफ्तार कर के राज मन्दिर मे लाओ। अब अधिक बातो का अवकाश नही, चलो। (स्यून) (गये)

अंक १ दृश्य ७

राज महल का भीतरी भाग

(रायसिह का हाथ मे ताज लिये खडे दिखाई देना)

रायसिह——

यह ताज होता है साया गुस्तर किसी के सिरसे किसीके सिरपर,
नही है इसको करार दमभर किसीके सिरसे किसी के सिरपर।

हजारों लाखो गले कटाये फसाद मुल्को मे यह मचाये,
नजरमे आते हैं खूनी मनजर किसीके सिरसे किसीके सिरपर।

'ते' 'अलफ' और 'जीम' के मजमूए का नाम ताज है, यह जिस के सिर पर आया, उसे उलटा बनकर दुनिया से 'जीम' 'अलफ' और 'ते' यानी जात रहने का मजा दिखाया। दुनिया वाले समझते है कि साहिबे ताज होना बडी खुश नसीबी है, जिस को यह मिला उसको फिर काहे की कमी है। लेकिन यह नही समझ सकते कि इसे इसके दरम्यानी हरफ 'अलफ' को उडा कर यानी तज कर काम मे लाना मुनासिब और बहतर है। जिस पर यह अपनी रहमत फरमाता है, उसका दुनिया से ऐश, आराम, राहत सब कुछ उठ जाता है ———

नही राहत से है मतलब कभी कुछ ताज वालेको
कि फिक्र ओ गम मुसाहिब है हमेशा राज वाले को।

कही फिक्र गनीम है, कही शौले नार हजीम है, कही रय्यत की तकलीफ का ख्याल, कही रंज है या मलाल। इशरत से काम नही, राहत का नाम नही। मुझ से पूछा जाय तो वह शख्स जो फूस के झोपडे मे लम्बी चादर ताने ईश्वर का धन्यवाद करता हुआ बे फिक्र सोया है, मुझ से हजार दरजे अच्छा है —

मुझसे तो उस गरीब की किसमत ही खूब है,
सोता है झोपडे में जो दुनिया को छोड कर।

सच है, जिसको बेफ़िक्री नसीब है , वही इस ससार मे खुश नसीब है। यह शैर भी सुनहरी अक्षरो में लिखने के काबिल है, हर दम नजरो मे रखने के काबिल है। इसे मैं अपना आदर्श बनाऊ गा, दरो दीवार को इसकी तहरीर से सजाऊ गा।

(दीवारोपर कई जगह शेर लिखता है,
चोबदार का प्रवेश)

चोब०—श्रीमान् !

राय०—क्या है ?

चोबदार—समाचार मिला है कि जोधपुर से वहा के राजकुमार सैर के लिये इस नगर में पधारे हैं।

राय०—जोधपुर के राजकुमार ? अच्छा जाओ, मैं अभी आता हू। (चोबदार गया) अहो भाग्य कि राजकुमार इस नगरी मे पधारे, चलू उनको सह आदर लाऊ, और अपने गरीबखाने पर ठहराकर अपना कर्तव्य निभाऊ —

नही अचरज तमन्ना गर मेरी भी आज बर आये,
मेरी पुत्रीकी किस्मत उनके चरणो से जो लड जाय।

(रायसिंह का प्रस्थान, और उसकी रानी का जो उसकी
बातें अन्दर से सुन रही थी प्रवेश)

रानी—पुत्री की किस्मत लड जाये ! किसकी ? बेला की या वीना की ? हे देव ! कही किया कराया उलटा न पड जाये, मेरी उम्मेदो के पौधे पर पाला न पड जाये। वीना का विवाह बेला की अपेक्षा किसी अच्छी जगह न हो जाये।

नही, कभी नही जब तक मैं जीवित हू ऐसा कदापि न होगा। यदि होगा तो वही होगा, जो मैं ने सोचा है। मेरा इरादा, मेरा विचार कभी नही बदल सकता, जो कुछ मैं ने धारा है वह कभी नही टल सकता। मै सिपाहियो को आज्ञा दे चुकी हू कि वह किसी मूर्ख अनपढ गवार तथा दरिद्र मनुष्यको जहा कही पाये, आज ही पकड कर राज मन्दिर मे ले आये। अब अवसर है घात करू, जोधपुर के राजकुमार से अपनी बेटी बेला का विवाह रचवाऊ, औ बीना को उस निर्धन भिक्षुक के पल्ले बंधवाऊ, राजाको लासेपर लगाऊ, और अपनी मनोकामना पाऊ।

(रानी का जाना, तथा बीना का पुस्तक हाथ मे लिये सहेलियो सहित प्रवेश)

बीना विद्या? —

विद्या बिन इस जगत मे न कुछ आदर भाव,
दीखे विद्या बिन मनुष्य नीर बिना ज्यो नाव।

घर बैठे दुनिया की सैर करनी हो तो इससे कीजिये —

सैर दुनिया की घर बैठे करना,
यह तमाशा किताब मे देखा।

ससार की समस्त सम्पदाओ से यदि उच्चतम है तो विद्या ——

न घटती दान देने से न चोरी का इसे डर है,

यह है वह कीमिया जगमे कि लौंडी दौलतो जर है।
यही एक साथ जाती है पसे मुर्द न भी इन्सा के,
लियाकत का शराफत का जो देखो तो भरा घर है।

(बेला का प्रवेश)

बेला—बहन बीना! यह लो मुई पुस्तक फिर हाथ मे, भला बहन इस मे ऐसा क्या रस भरा है, जो हर समय तुम्हारा चित्त इस मे धरा है।

बीना—बहन तुम अभी परिचित नही, यदि इसकी चाट तुम्हारे दिमाग को पड जाती, तो कभी यह शब्द जिह्वा पर न लाती।

बेला—परमात्मा न करे कि मुझे इसकी चाट पडे।

बीना—बहन! यह तुम्हारी भूल और अज्ञानता है, विद्याहीना स्त्री जगत मे ऐसी है जैसे बिना दीपक के घर —

हमी दीपक है हर घरमे हमी से ही उजाला है,
जगत मे धर्म की नय्या को हमने ही स भाला है।
हमारी शक्तिया पोशीदा थी अर्जुन के तीरो मे,
हमारी जानि ने ही भीमसे वीरो को ढाला है।
हमे अबला न समझो तुम, है आकिल हम जमानेकी,
कसौटी है हमी खोटे खरे के आजमाने की।

बेला—होगा बहन, मगर मै तो यह समझती हू कि जिस तरह चन्द्र बिना तारे शोभा नही देते, उसी प्रकार स्त्री बिना आभूषण सुन्दर प्रतीत नही होती, देखो बहन कल माता

जी ने मुझे यह कंगन बनवा दिया है, बताओ तुम्हारी पुस्तके अच्छी है या हमारा कंगन ?

बीना किसीको इलमकी दौलत जमाने में मयस्सर हो,
वह सीमो जरमे फिर फिरऔन से इस जा पे बढकर हो।
जहा मे हमसरे दारा हो वह रश्के सिकन्दर हो।

बेला—होगा बहन तुम्हारे सामने जबान कौन हिलाये, इन बातो मे तुम्हे मुंह कौन लगाये। पुस्तको को भाड मे डालो। चलो आओ, थोडी देर सैर करें जी बहलायें।

(सैर करती है बेला की दृष्टि रायसिंह के लिखे शैर पर पड़ती है)

बेला—यह क्या ?

बीना—किसी का लिखा हुआ शैर।

बेला—किन्तु इसे राज मन्दिर की दीवार पर लिखने का किसे साहस हुआ ?

बीना—किसी ने लिख दिया होगा।

बेला—भला तुम इसे पढ सकती हो क्या लिखा है ?

बीना—क्यों नही इसमे लिखा है —

मुझसे तो उस गरीबकी किस्मत ही खूब है,
सोता है झोंपडे में जो दुनिया को छोडकर।

बेला—समस्या तो खूब है, भला बहन इसका जवाब कोई लिखे तो क्या लिखे,?

बीना—जरा ठहरो मैं बताती हू, (सोच कर) —

भरा है जग सरासर गो मुसीबत ही मुसीबत से,
सती नारी बदल सकती है लेकिन उसको राहतसे।

बेला—समस्या तो खूब है, किन्तु मुझे पढ़ना लिखना तो आता ही नहीं।

बीना—यदि तुझे पढ़ना लिखना आता तो क्या होता ?

बेला—तो मै इस शैर के उत्तर मे अवश्य इसके नीचे ही लिख देती, मेरी अच्छी बहन !

बीना—बोलो क्या कहती हो ?

बेला—तुम इतनी दया करो कि इसका जवाब लिख दो।

बीना—बेला तुम सदा बच्चो की सी हठ किया करती हो।

बेला—इसमे भला तुम्हारी क्या हानि है ?

बीना—लिखे तो देती हू, किन्तु मेरा विचार कहता है कि इस का परिणाम अच्छा न होगा।

बेला—चाहे कुछ भी हो किन्तु तुम लिख तो अवश्य ही दो।

(बीना शैर लिखती है और दोनो बहने चली जाती है, दूसरी ओर से रायसिंह का अपनी रानी सहित प्रवेश)

रानी—नही प्राणनाथ ! कुछ भी हो मेरी कन्या बेला का विवाह तो अवश्य किसी उच्च कुल के राजकुमार से किया जाये।

राय—बेला के विवाह की इतनी जल्दी नही जितनी कि बीना के, बेला अभी नादान है और बीना विवाह के योग्य।

रानी—नहीं जी ऐसा हो ही नहीं सकता कि बेला रह जाये,

राय—अच्छा तो तुम महल मे जाओ, कुछ दिन के बाद इस का प्रबन्ध भी किया जायेगा।

रानी—नही जी, महाराज जोधपुर के राजकुमार से ही बेला का विवाह रचाओ, बीना के लिये कोई और तजवीज कराओ।

(बेला का प्रवेश)

बेला—पिताजी! देखिये बहन बीना ने दीवार पर लिखे हुए शैर का उत्तर लिखकर अपनी योग्यता का परिचय दिया है।

राय—कहा ?

बेला—वहा उस दीवार पर शैर के बिलकुल नीचे।

राय—क्या लिखा है ? (पढता है)—

भरा है जग सरासर गो मुसीबत ही मुसीबत से,
सती नारी बदल सकती है लेकिन उसको राहत से।

यह क्या ? मेरे विचारो का बिलकुल विरोध, मैं कहता हू कि सुख सन्तोष मे है और बीना कहती है कि सती नारी के होने से नरक भी स्वर्ग बन जाता है। बेला जा और तुरन्त बीना को लेकर आ।

रानी—(मन मे) अब अवसर है, राजा को भडकाऊ, भुस में आग लगाऊ, और अलग खडी हो जाऊ। (प्रगट) हा महाराज! देखिये न भला एक अबला स्त्री की क्या शक्ति है, कि ईश्वरी माया में विरोध उत्पन्न कर सके, यह

बिल्कुल झूठा शैर है ।

(बेलाका बीनाको लेकर आना)

राय—बीना !

बीना – हा पिता जी !

राय–तुझे मालूम है कि मैं कौन हू ?

बीना–(मन मे) हे दैव आज यह निराला प्रश्न कैसा –

अया आसार चहरे से है कुछ कहरो गजब कैसे ?

राय–जवाब दे चुप क्यो हो गई ?

बीना—पिता जी ! मुझे आश्चर्य है कि यह प्रश्न क्यो किया जा रहा है ?

राय–मैं पूछता हू तू जवाब दे, तुझे मालूम है कि मैं कौन हू ?

बीना–इस नगर के राजा, इस परिवार के बुजुर्ग और मेरे पिता ।

राय–पिता के रुत्बे को तू जानती है ?

बीना–पिता, पिता के रुत्बे का क्या कहना –

दोहा ।

पिता जगत मे ईश सम नाही कोऊ समान,

कम है उन पर हम यदि वारे अपने प्राण ।

राय–फिर उस ईश सम पिता का यह निरादर !

बीना–हॅय, निरादर ! किसने किया, कब किया ?

राय–हा, हा, निरादर तूने किया और आज किया ।

बीना–मैं ने किया ? परमात्मा मे यह क्या सुनती हू, पिताजी आप यह क्या कह रहे है ?

राय–जो कुछ कहता हू, सच कहता हू, तुझे मालूम है कि यह शैर किसने लिखा है ?

बीना–मैं ने।

राय–और यह किसने लिखा है ?

बीना–मुझे नही मालूम।

राय–अब तुझे काहे को मालूम होगा, अपराधी ठहरने का समय आया तो मुकरने लगी, क्या तुझे नही मालूम था यह मेरा लिखा हुआ है ?

बीना–(मन मे) अब इन्हे क्या उत्तर दू ?

रानी–हा, हा, बनाले बनाले, कोई बहाना बनाले।

बीना–पिताजी ? क्या मुझे आज्ञा है कि यह मालूम कर सकूं कि मान लीजिये, मुझे ज्ञात था क्या ज्ञात होना कोई अपराध है ?

राय—यह ज्ञात होना तो कोई अपराध नही परन्तु बडो की बातो का झूठा और जाहिलाना जवाब देना अलबत्ता अपराध है। तूने यह अपना शैर क्या समझ कर लिख मारा ?

बीना—बस इतनी सी बात है, पिताजी ! शात होइये और शात चित्त से सुनिये, मैं ने जो कुछ लिखा है वह न गलत है और न गलत हो सकता है।

रानी—देख लीजिये, कैसी गुस्ताखी से मुह दर मुह जवाब देती है, कुसूर करती हे और ऊपर से अकडती , चल कम्बख्त ! बाप की बुजुर्गी का भी कुछ ख्याल न किया

गया, बिना जबान खोले न रहा गया। क्या करू' सौतेली लडकी है, जमाने से डरती हू, अगर ईश्वर न करे मेरी बेटी होती तो मजा चखा देती, इस जबा दराजी की वह सजा देती कि उम्र भर याद करती।

राय—बस बीना अब बर्दाश्त नही कर सकता, मैं भी देखता हू कि यह तेरा लेख कहा तक सच्चा है, किस तरह एक विपद् ग्रस्त के कष्टो को एक सती नारी सुखो मे बदल सकती है। मैं तेरा विवाह एक निर्धन दरिद्र व्यक्ति से किये देता हू, फिर देखूगा कि क्योकर तू उसको अमीर बनाती है, किस तरह उसके दु खो को सुखो मे बदलकर दिखाती है। चोबदार!

चोबदार—सरकार।

राय—जाओ और शहर मे से एक निर्धन दरिद्र मनुष्य को पकड कर हमारे पास लाओ।

रानी—ठहरिये महाराज जरा ठहरिये, मुझे भय है कि लोग मुझे बुरा न कहे।

राय—नही इसमे तुम्हारा क्या अपराध है, जो जैसा करे वैसा भरे।

रानी—अच्छा चोबदार! यह आज्ञा जमादार को सुनाओ कि वह उस मनुष्य को उपस्थित करे। (चोबदार गया)

राय—बीना! अब भी सोचले, क्षमा माग, और अपने शब्द वापिस ले, वरना पछतायेगी, सड सड कर मर जायेगी।

बीना—विधाता ने जो कुछ रचो है वही पेश आयेगी, किन्तु बीना सत्यता से कदापि पीछे कदम न हटायेगी —

मैं सच्ची राह से हर्गिज न अपना मु ह फिराऊ गी,
बला से गर मैं अपनी जान भी इसमे गवाऊ गी।

राय—सब आटे दाल का भाव मालूम हो जायेगा, जब कगाली और दरिद्रता अपना मुंह दिखायेगी, तो यह सारी शेखी किरकिरी हो जायेगी।

[जमादार का लकडहारे को लिये हुये प्रवेश]

जमादार—श्रीमती महारानी जी ! यह वह मनुष्य उपस्थित है।

राय—लाओ, लाओ, पण्डित को भी बुलाओ और इस मगरूर का विवाह इसी कगालके साथ रचाओ ।

लक०—हे देव ! यह क्या मामला है ?

बीना—परमात्मा बस तेरा ही सहारा है।

(पण्डितका प्रवेश)

राय—पण्डितजी ! इस मनुष्यके साथ इसका विवाह रचाओ।

लक०—परन्तु महाराज ! कुछ सोच विचार के । कहा यह राज महल की रहने वाली राजकुमारी, कहा मैं जगलका वासी, एक भिखारी।

राय—बस खामोश, हमारे हुक्ममे इसरार फिजूल है।

बीना—परवाह नही, यदि मेरे सतीत्व में कुछ बल है तो यह भिखारी ही राजकुमार हो जायेगा, मेरे मान और गौरव को बढायेगा.—

तसल्ली दे रही है जीवनी मुझको तपस्विन की,
बनेगी ढाल नादारी मेरा आधार जीवन की।

पंडित–श्रीमान् यह जोडा तो उचित नही है।

राय—बस कह दिया कि यहा उचित अनुचितका सवाल नही है।

पण्डित–ईश्वर इच्छा। (हाथ मिलाता है और मंत्र पढता है)

राय—क्यों भाई तेरा नाम ?

लक०—गुमनाम।

राय–खैर जी मुझे इससे क्या काम, जाओ, इस लडकी को अपनी सेवाके लिये साथ ले जाओ, कुछ चिन्ता मनमे न लाओ।

(रायसिंह, रानी तथा बेला आदिका जाना और लक्कडहारा तथा बीना का अकेले रह जाना)

लक०—हा विधाता! यह तूने क्या किया? एक महलो के रहने वाली राजकुमारी किस तरह जंगलोंमे जिन्दगी बसर करेगी, मै गरीब मुफलिस और लाचार हू, कहा से सामान आसायश एकत्र करूंगा, क्या करूंगा, क्या न करूंगा। (विचारमें पड़ता है)

बीना–प्राण प्यारे—

कीमती वस्त्र गद्देलोंपर मरे वह हम नहीं
नीमका तिनका बुलाके कुन्दनी से कम नही।

इस लिये क्यो सोच सागर में डूबे जाते हो, क्यों घबराते हो —

जरूरत रज की है और न कुछ गम की है अब तुमको,
नही महलो से कम होगी झौंपड़िया फूसको हमको।

गाना

ऐसी तकलीफो मे पोशीदा है राहत मेरी,
इससे तो बढ जायेगी कीमत मेरी।
गो कि खोटा या खरा है यह बला से लेकिन,
मेरी दुनिया है इसीसे यह ही दौलत मेरी।
गो बुरा है या भला है यह पति है मेरा,
इनके चरणोपर फिदा होना हैं इज्जत मेरी।
किस्सये नल दमन तो सुना है सबने,
एक नया और सबक देगी मुहब्बत मेरी।
इनकी सेवासे लगे पार यह नैया मेरी,
इनके सायेमे छुपी जग मे है "जन्नत" मेरी।

(लकडहारा और बीनाका प्रस्थान)

ट्रान्सफर

अंक १ दृश्य ८

बाग़

(धमलू, जालिमसिंह तथा विजयसिंहका प्रवेश)

विजय०-और तो सब हो गया अब केवल तुम्हारी होशि-

यारी का काम है ।

धम०-जैसा आपने कहा है वैसा ही अमल में आये तो धमलू नाम है ।

जालिम-देखो ख्वाहमख्वाह की बात न बनाना, सिर्फ जरूरत के वक्त जबान हिलाना, हा की जगह हा और नही की जगह नहीं काम मे लाना ।

धम०—मेरा तो फर्ज है सिर्फ आपका इरशाद बजाना ।

विजय—देखो, होशियार रहो राजा रानी सहित आ रहे हैं ।

[रायसिंह तथा उसकी रानी का प्रवेश]

रायसिह—(धमलू से, जो जोधपुरका राजकुमार बना हुआ है) आखाह, आप तशरीफ ले आये, कहिये आपका मिजाज तो अच्छा है ?

धम०—शुक्र है।

राय—आपके पिताजी तो अच्छे हैं ?

धम०—सारे गुल व पौदे खिले जाते है, लहलहाते हैं, कुदरत की कारीगरीका नमूना दिखाते हैं ।

विजय—(मन में) अरे यह क्या कह रहा है ?

राय—राजकुमार तो बडी पुरपेच गुफ्तगू करते हैं, मालूम होता है शायरोकी सफ में भी कदम रखते हैं ।

जालिम-जी हा महाराज, आखिर तो राजकुवर है ।

धम०-हमारी राजधानी

जालिम-जोधपुर, जोधपुर ।

धमल्लू–जी हा जोधपुरमें अगर आप पधारे तो देखे किस कदर बाग दिखाता हू, कहा कहा की सैर कराता हू।

विज०—(स्वत) अरे कमबख्त! बाधके, बाधके ।

राय—तो क्या आपको बागबानी मे भी महारत है ?

जालि०—(स्वत) यह तो इनका मौरूसी काम है।

विज०—हमारे कुवर साहिब को इस काम मे बडी मश्शाकी है ।

जालि०—(स्वत) प्रभो! अब लाज तुम्हारे हाथ है।

धमल्लू—अगर आप चाहे तो अभी एक गजरा गूथ लाऊ ।

रानी—नही, नही आप तकलीफ न फरमाये, (रायसिह से) राजकुवर बडे उदार हृदय मालूम होते है ।

जालि०—दादो दहश, करमो बख्शिश तो इनकी चिट्टीमे पडी है ।

विज०—और दौलत तो इनके घराने मे हाथ जोडे खडी है ।

रानी—(राजासे)तो अब इनसे मेरी बेलाकी शादीका प्रस्ताव करो।

राय—(जालिम सिंह से) मुझे आप से कुछ कहना है।

जालि०—फरमाइये, फरमाइये, क्या हुक्म है ?

राय—यह तो आप को मालूम ही है कि यह बेला विवाह के योग्य हो गई है ।

जालि०—इसलिये ?

राय—इसलिये मेरा इरादा है कि राजकुवर के साथ इसका विवाह हो जाय तो अच्छा है, क्यो विजयसिहजी आपका क्या ख्याल है ?

विज०—आपका पहले भी कुछ ऐसा ही विचार था ।

राय–हा, और अब तो सयोगवश कारण भी ऐसे ही आपडे है ।

जालि० - तो फिर इसमे हरज ही क्या है ?

विज० - मगर राजकु वर की इजाजत लेली जावे ।

राय०—तो क्या कु वर साहिब को कुछ इनकार होगा ?

रानी—यदि आप आज्ञा दे तो मैं पूछ लू ।

राय—जरूर ।

रानी—श्रीमान् कु वर साहिब !

धम्लू—मुझे अफसोस है कि यहा कोई अच्छा बाग नही ।

रानी— यदि आपकी आज्ञा हो तो राजकुवारी बेला आपकी सेवा मे दी जाये ?

प्रम०—हरज तो कुछ नही, परन्तु पिता जी की

राय—पिता की आज्ञा की क्या जरूरत है, आखिर हम भी तो आपके पिता समान है।

प्रम०—अच्छा तो जैसी आपकी इच्छा ।

राज०–हा जी जैसी आपकी इच्छा, बुलाइये, पण्डित को बुलाइये, और आनन्द से विवाह रचाइये ।

(पण्डित बुलाया जाता है और विवाह होता है)

गाना

हा नाचे गाये नारी प्यारी चलो वारी वारी जाय,
हम जाये बलिहारी प्यारी चलो, वारी वारी जाये ।
बाग मे है फूल खिले प्यारी मैं वारी,
हर सू है बादे बहारी, यह झूम झूम देखो हो गुलो की शान,

ड्राप । वारी, वारी

धमलू–जी हा जोधपुरमें अगर आप पधारें तो देखे किस कदर बाग दिखाता हू, कहा कहा की सैर करोता हू।

विज०—(स्वत)अरे कमबख्त ! बाधके, बाधके ।

राय—तो क्या आपको बागबानी मे भी महारत है ?

जालि०—(स्वत) यह तो इनका मौरूसी काम है।

विज०—हमारे कु वर साहिब को इस काम मे बडी मश्शाकी है ।

जालि०—(स्वत) प्रभो ! अब लाज तुम्हारे हाथ है।

धमलू—अगर आप चाहे तो अभी एक गजरा गू थ लाऊ ।

रानी—नही, नही आप तकलीफ न फरमाये, (रायसिह से) राजकु वर बडे उदार हृदय मालूम होते हैं ।

जालि०—दादो दहश, करमो बख्शिश तो इनकी चिट्ठीमे पडी है ।

विज०—और दौलत तो इनके घराने मे हाथ जोडे खडी है ।

रानी—(राजासे)तो अब इनसे मेरी बेलाकी शादीका प्रस्ताव करो।

राय—(जालिम सि ह से) मुझे आप से कुछ कहना है।

जालि०—फरमाइये, फरमाइये, क्या हुक्म है ?

राय—यह तो आप को मालूम ही है कि यह बेला विवाह के योग्य हो गई है ।

जालि०—इसलिये ?

राय—इसलिये मेरा इरादा है कि राजकु वर के साथ इसका विवाह हो जाय तो अच्छा है, क्यो विजयसिंहजी आपका क्या ख्याल है ?

विज०—आपका पहले भी कुछ ऐसा ही विचार था ।

राय-हा, और अब तो सयोगवश कारण भी ऐसे ही आपडे है ।

जालि० - तो फिर इसमे हरज ही क्या है ?

विज० - मगर राजकु वर की इजाजत लेली जावे ।

राय०—तो क्या कु वर साहिब को कुछ इनकार होगा ?

रानी—यदि आप आज्ञा दे तो मैं पूछ लू ।

राय—जरूर ।

रानी—श्रीमान् कु वर साहिब !

धमलू—मुझे अफसोस है कि यहा कोई अच्छा बाग नही ।

रानी—यदि आपकी आज्ञा हो तो राजकुंवारी बेला आपकी सेवा मे दी जाये ?

धम०—हरज तो कुछ नही, परन्तु पिता जी की

राय—पिता की आज्ञा की क्या जरूरत है, आखिर हम भी तो आपके पिता समान है ।

धम०—अच्छा तो जैसी आपकी इच्छा ।

विज०—हा जी जैसी आपकी इच्छा, बुलाइये, पण्डित को बुलाइये, और आनन्द से विवाह रचाइये ।

(पण्डित बुलाया जाता है और विवाह होता है)

गाना

हा नाचे गाये नारी प्यारी चलो वारी वारी जाय,
हम जाये बलिहारी प्यारी चलो, वारी वारी जाये ।
बाग मे है फूल खिले प्यारी मैं वारी,
हर सु है बादे बहारी, यह झूम झूम देखो हो गुलो की शान,

ड्राप । वारी, वारी

अंक २ दृश्य १

जङ्गल

[बीना तथा लकड़हारे का खड़े दिखाई देना]

लक०—सुन्दरी! मैं लज्जित होता हू।

बीना—आप लज्जित होते है, क्यो? स्वामी! कोई अपने अङ्ग से भी लज्जित होता है, कही ऐसा भी देखा गया है?

लक०—महलो के रहने वाली को एक गरीब का झौंपडा क्योकर भायेगा, जो हरदम सहेलियो मे घिरी रहती थी उसे अकेले रहना क्योकर सुहायेगा——

जो मोहन भोग का आदि हो क्यो टुकड चबायेगा,
तुम्हें अब सुन्दरी यह झौंपडा क्योंकर सुहायेगा।

बीना—सुहायेगा, स्वामी अवश्य सुहायेगा——

मैं सीता बनके अपने रामके पाव दबाऊ गी,
मैं अपने दिलके मन्दिर का तुम्हें ठाकुर बनाऊ गी।

लक०—मैं सोचता हू।

बीना—आप क्या सोचते हैं?

लक०—कोयल का विवाह एक कौवे से किया गया है, स्वर्ग की अप्सरा का हाथ एक नीच के हाथ में दिया गया है।

बीना—प्राणाधार!——

गुनाह गो मेरे बेहद हो मुझे परवाह नही लेकिन,
मुझे बे इन्तिहा उम्मेद है खालिक की रहमत से ।

आप गम न फरमाइये, कोई ख्याल दिल मे न लाइये.——

फलक की गर मेरे दिलपर सबही नाजिल बलाये हो,
फिरिश्तो की मेरे हक मे दुआये बद दुआये हो ।
न छूटे हाथ से दामन न टूटे रिश्तये उलफत,
जफायें आप की हो लाख पर मेरी वफाये हो ।

लक०—सुन्दरी, मैं तुम्हारे यह प्रेम भरे वाक्य सुन कर प्रसन्न चित्त से दुआ मागता हू कि

नेकी मे जब तलक कि निकोई की खू रहे,
जब तक कि बागे दहर के फूलो मे बू रहे ।
दुनिया की बद निगाही से महफूज तू रहे ।

बीना—ऐसा ही होगा स्वामी ——

जब तक जिऊ जहान मे दासी बनी रहू
नक्षत्र हो जो तुमतो मै राशी बनी रहू ।

लक०—जाओ और इस झोपडे मे विश्राम पाओ, मैं बाजार जाता हू और अभी वापिस आता हू ।

बीना—स्वामी ! बाजार से क्या लाइयेगा ?

लक०—जीवन का सहारा ।

बीना—परन्तु आपके पास पैसा तो है ही नही, लाइयेगा कहा से ?

लक०—जहा से पाऊ गा, अथवा उधार लाऊ गा ।

बीना—नही स्वामी ! उधार और ऋण यह दोनो शब्द मनुष्य

के शत्रु है, इसलिये मेरी तुच्छ बुद्धि के अनुसार ये दोनो काम ठीक नही, और न मेरा मन इस बात को स्वीकार करना है। लीजिये यह मेरे कंगन, इन्हे बाजार मे ले जाइये, बेचकर सामग्री ले आइये।

(लकड़हारे का कगन लेकर जाना)

बीना—(स्वत) दु ख कहा है ? अशान्ति मे, सुख और आनन्द कहा है ? शाति और सन्तोष में, शाति को प्राप्त करने के लिये कौनसी वस्तु बाधक होती है ? मन की चञ्चलता। मन की चञ्चलता क्योकर रोकी जा सकती है ? अपनी वासनाये दबाने से, अपने आपको खाक मे मिलाने से। कोई मनुष्य अपने आपको खाक मे क्योकर मिला सकता है ? त्याग से, त्याग का क्या साधन है ? बन में रहना और बस्ती से परहेज। इससे क्या प्राप्त होता है ? शाति, तो फिर यह तो मुझे प्राप्त हो गई, अब क्या फिक्र है, इस बन मे अशाति का क्या जिक्र है।

गाना।

सखी रात समय मैं सोय रही,
मोहे झलक दिखा गयो सावरिया।
वाके शीश मुकुट गल माल पडी,
अधरन पे धरे था बाँसरिया। सखी०
हरि श्याम वर्ण दोऊ नैन बडे,
मकराकृत कुण्डल कान पडे

वाकी जादू भरी बाकी चितवन,
सखी मन हर लीना छलबलिया। सखी०
पट पीत दिखे घन मे बिजली,
हिये उपर चिन्ह चरण द्विज का,
जिनके यह पुत्र भये जग मे,
है धन्य तिहोंपुर मे मइया। सखी०

(लक्कड़हारा आता है)

लक०—(स्वत) शुद्ध और अशुद्ध प्रेमका व्यवहार, पति के घर मे एक सपत्नी और सती नारी का चमत्कार।

बीना-[झोंपडे मे से निकल कर] है, यह सुगन्ध कैसी ? यहा तो कोई भी वस्तु ऐसी दिखाई नही देती, [लकड हारे से] यह भीनी भीनी सुगन्ध कहा से आ रही है ?

लक०-यह सुगन्ध तो उस लकडी की है जो चूल्हे मे जल रही है।

बीना-तो यह चन्दन है, (मन मे) आश्चर्य की बात है कि जिस मनुष्य के घर चन्दन जलाया जाये, फिर भी वह निर्धन तथा कंगाल कहलाये !

लक०—ऐसी लकडी तो मैं रोज ही जङ्गल से लाता हू, कुछ यहा छोड जाता हू, कुछ बाज़ार मे बेच आता हूं।

बीना—क्या इसी प्रकार की ?

लक०—हा।

बीना—आप किसके हाथ बेचा करते हैं ?

लक०—एक महाजन लाला लोभीलाल के हाथ।

बीना—और वह उसका मूल्य क्या दिया करता है?

लक०—भोजन।

बीना—केवल भोजन?

लक०—हा।

बीना—अच्छा, (स्वत) यह चाल, यह फरेब—

बढ गई इतनी हवस तुझमे अरे खाना खराब!

लक०—[मन मे].———

बढ रहा हैं ईश्वर क्यो इस कदर यह इजतिराब?

बीना—आप कब से यह लकडिया उसको दे रहे है? स्वामी यह तो चन्दन है।

लक०—चन्दन है?

बीना—हा चन्दन, बहुमूल्य काष्ठ, स्वामी यह तो संसार मे एक धन है, आप लोभी के पास जाइये, और अपना पिछला हिसाब तलब फरमाइये। मैं भी मरदाना लिबास मे आती हूं, और कौडी २ वसूल कराती हूं।

(गये)

अंक २ दृश्य २

खण्डहर

[धमलू तथा बेला का प्रवेश]

बेला—वह आपके प्यादे तथा सवार क्या हुए?

धम०—(मन में) अब क्या जवाब दू ? (प्रगट) प्यारी घबराओ नही सब अपने अपने काम पर हैं।

बेला—आपने यह क़याम किसके यहा किया है ?

धम० —यह बगीचा तो अपना ही है।

बेला-आप तो राजकुवर हैं, राज भवन कहा है ? यह तो खण्डहर नजर आते हैं, हे ! तुम तो चुप हो गये, उत्तर क्यो नही देते ?

(जालिम तथा विजय का प्रवेश)

जालि० —बोलना बेकार है।

विज०-हजरत यह वस्त्र उतारिये, और अपने असली जामे से तन को सुसज्जित कीजिये।

बेला—राजकुवर से यो बेअद्बी से पेश न आइये ।

जालि०—राजकुवर की भूल में न रहना, तुम हो और फूलो का गहना, खतम हो चुका शाही इकतिदार का जमाना।

बेला—[धमलू से] आप के मुलाजिम इस कदर गुस्ताख और बेबाक, ये कह रहे है और आप सुन रहे है ?

धम० —बस करो, बस करो, अब अधिक लज्जित न करो।

जालि० —लज्जा की क्या बात है, [बेला से] यह जो कुछ मुइम्मा है, तुम्हारे बाप की बद सलूकी का परिणाम है। अगर वह मेरे साथ बदसलूकी से पेश न आते, तो तू होती और किसी राजकुवर का सुसज्जित महल। पहचान जिसे तू राजकुवर समझती है, वह राजकुँवर नही वरन्

धमलू माली है ?

बेला—धमलू माली ?

जालिम—हा धमलू माली, अब भी अगर तू उससे बचना चाहे तो यह तेरा काम है।

बेला—क्योंकर ?

जालिम—तेरी खिद्मत के लिये यह गुलाम तैयार है।

बेला—यानी ?

जालिम—यानी यह कि अगर तू धमलू को छोड कर मेरा घर आबाद करे, मुझे शाद करे।

बेला—जालिम, निर्दयी, बेहया, अव्वल तो किया मुझ से दगा और अब चाहता है कि बनू बेवफा। नीच! जा दूर हो, यदि यह निर्धन है तो होने दे मुझे परवाह नही।

जालिम—तो क्या तू भी अपने बापकी तरह मुझ से पेश आयेगी, क्या अब भी तुझे उम्मेद है कि मेरे हाथ से बचकर निकल जायेगी ? विजय !

विजय—जी।

जालिम—उठाले इस मगरूर को और ले जा दरिया के किनारे; चल मैं भी आता हू, और इसका सारा गरूर खाक में मिलाता हू।

(विजय का बेला को जबर्दस्ती ले जाना, धमलू का गुल मचाना, जालिमसिहका मुह दबाना, टेबला)

———— ० ※.०———

अंक २ दृश्य ३

लोभीलाल के मकान का भीतरी भाग

(एक तरफ से लोभीलाल और दूसरी तरफ कुर्सी लिये नौकर का प्रवेश, आपस मे टकरा कर दोनो गिरते है)

लोभी—अरे राड का अन्धा है ?

नौकर—अगर कोई अन्धा कहता है तो झूठ कहता है ।

लोभी—आखे फूट गई है क्या ?

नौकर—फूटी तो, मगर सामने की ।

लोभी--दीखता नही ?

नौकर—आपको ।

लोभी—देख हमारे चोट लग गई ।

नौकर—चोट लग गई ? कहा लग गई, दामन के घेर मे, या धोती के फेर मे, लाओ लाओ, उतार दो झाडदू ।

लोभी—चल राड का मस्करी करना है मस्करी । (नौकर को निकाल देता है] [स्वत] गर्जमन्द बावला होता है, अगर कोई सच्चा होशियार है तो गर्जमन्द, गर्जमन्द जब सोचेगा, अपने मतलब की, मतलब के लिये मैला तक उठवा लो, मतलब निकलगया, तो तू कौन और मैं कौन ? चरसी यार किसके, दम लगाया और खिसके, मेरी भी गर्ज है लकडहारे से, हाय हाय कही ऐसा न हो कि सोनेका

अण्डा देने वाली मुर्गी उड जाये, आज अभी तक आया नही, लकडिया लाया नहीं, आता होगा, आता होगा, राम जाने क्या हुआ, अरे राड को क्यो सता रहा है ? हरे राम राम राम, देर नही हुई आता होगा, आता होगा, आता होगा, अरे आजा न आजा, आता होगा, आता होगा, रोटा खाता होगा।

बाहरसे एक आवाज—लाला जी दरवाजा खोलो।

लोभीलाल—अरे कौन है (दरवाजा खोलता है, एक नवयुवक अन्दर आता है)

युवक—लाला लोभीलाल की यही दुकान है ?

लोभी—हाजी यही है।

युवक—यही है तो जरा सेठ साहिब को बुलाइये।

(मसनद पर बैठ जाता है)

लोभी—(मनमे) अरे यह कैसा आदमी है, न राम राम न श्याम श्याम, न दुआ न सलाम, ऐसे बैठगया मानो इसीकी दूकान है।

युवक-हा साहिब जरा सेठ साहिब को बुलाइये

लोभी-हमारा ही नाम लोभीलाल है, आपको क्या काम है, फरमाइये।

युवक—ओ हो आप ही सेठ साहिब है, अच्छा अच्छा बैठो, बिराजो।

लोभी—परन्तु आपको काम क्या है ?

युवक—हमे इस तरह के चन्दन की आवश्यकता है। कई जगह दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ कि आपके यहा मिल सकेगा।

लोभी—हा, हा, हमारे पास इस रकम का चन्दन बहुत है।

युवक—किस भाव बेचते हो ?

लोभी—बाजार आज कल चार रुपये का है, अगर आपको अधिक दरकार होगा तो दो चार आना कम भी मिल जायेगा।

युवक—कैसे दूकानदार हो हमे सेरो का भाव मताते हो।

लोभी—साहिब मुझे मालूम नही आप कितना खरीदेगे।

युवक—मनों का भाव बताओ और माल दिखाओ।

लोभी—बहुत अच्छा, मगर नगद दाम।

युवक—आप भी कैसे आदमी हैं, लाखो का माल खरीदने वाले कहीं खाली भी आया करते है।

(लकडहार का प्रवेश)

लकडहारा—लाला जी राम राम !

लोभी—(मनमे) अरररर यह कमबख्त इस समय यमदूतकी भाति कहा से आन टपका, सब खेल ही बिगडता नजर आता है, (लकडहारे से) अरे इतनी देर कहा लगाई, लकडिया क्यो नही लाया ?

लक०—इतने दिन लकडिया लेते लेते आपका पेट नही भरा, न हिसाब न किताब, आज मेरा हिसाब चुकता करदो,

फिर देखा जावेगा ।

लोभी—कैसा हिसाब किताब ? हा समझा चल तुझे रोटिया खिला दूं, और एक आध फटा पुराना कपडा भी दिला दू ।

लक०—नही लाला साहिब आज हिसाब ही लेकर जाऊगा, अपनी रोटियोको तह कर रखो, वरना शोर मचाता हू, और मुहल्ले वालोको बुलाता हू ।

लोभी—हे हे ! अरे चुप चुप, मेरी लाखकी इज्जत खाकमे मिल जायेगी ।

लक०—मिल जायेगी तो मेरी जूतीसे, मै कुछ न सुनूगा, चुकता हिसाब लेकर टलूंगा ।

युवक—इस गरीबका हिसाब ही कर दो, मेरे साथ पीछे बात चीत करना, मुझे ऐसी जल्दी नही ।

लोभी—अजी यह तो पागल है, इसका हिसाब ही क्या है, खानेके लिये रोटिया मागता है, मगा देता हू ।

लक०—अगर पागल न होता तो इतने दिनो तक चन्दन से आपका घर न भरता ।

युवक—सेठ जी आप इससे फारिग होलें । मैं रुपया लेकर आता हू, और माल उठवाकर ले जाता हू । (गया)

लोभी—ले अब तू यहा से जाता है, या दूसरा उपाय किया जाये।

लक०—किसी और भूलमे न रहना, खोटी खरी कहो तो जरा सोच समझकर कहना, इतने दिन तक चन्दन दिया,

हिसाबका वक्त आया तो आखे दिखाने लगे । आये बडे सेठ बनकर, बेईमान ! ईश्वरसे डर, उस न्यायकारी का खौफ कर, पहला उपाय कर या दूसरा, मै हिसाब लिये बगैर जाने वाला नही ।

लोभी—ईश्वर से डरू, न्यायकारीका खौफ करू, क्यो करू ? अगर ईश्वर या परमात्मा डरने की चीज होती तो लोग उसे अपने पास ही क्यो बुलाते ?

लक०—सेठ जी ! तो लो मैं तो डट गया, बिना हिसाब अर्थी ही यहा से उठे, तो उठे अब तुम जानो और तुम्हारा काम ।

लोभी—(मन मे) यह कम्बख्त तो मानता नही, इज्जत और आबरू के खेल को जानता नही, इसे दो चार रुपये देकर टाल दू (लकडहारे से) अच्छा अगर दस पाच रुपये चाहिये तो लेजा, गड बड न कर, बाजारका मामला है, फिर और अगर तुझे जरूरत हो आना, लेजाना ।

(उजागरमलका प्रवेश)

उजा०—लाला लोभीलाल जी जय जय !

लोभी—जय जय, (मन मे) यह जय जय कैसी ? (प्रगट) कहो लाला उजागरमल कैसे आना हुआ ?

उजा०—अजी यूही फिरते फिरते चले आये, लो लाला दुनीचन्द जी भी पधारे, आइये आइये, पधारिये पधारिये ।

दुनी०—लाला लोभीलाल जी जयगोपाल ! कहो मित्र प्रसन्न हो ?

(उसी नवयुवकका प्रवेश)

लोभी—हा जी अच्छा हूं । (मन में) राम जाने इन लोगोको क्या हुआ मु ह उठाये इधर ही चले आते है।

दुनी०—कहो जी लाला उजागरमल! आज कल व्यापारका क्या हाल हैं?

उजा०—यह तो लाला लोभीलाल से पूछो।

दुनी-आते आते रास्ते मे लाला गिनीचन्द और सागर-मल भी मिले थे, मालूम नही अभी तक क्यो नही आये?

लोभी—वास्तव मेरी दूकान वैसे तो आप की दूकान है, परन्तु बिना सबब यहा तक आने का कष्ट करने का कारण तो बताइये?

उजा०—जरा ठहर जाइये, दातो के नीचे जबान दबाइये, जो हडियामें है वह थालीमे आयेगा, थोडी देर मे कय पसेरीका सेर होता है मालूम हो जायगा।

(गिनीचन्द तथा सागरमलका प्रवेश)

दोनो—लाला लोभीलाल जी जयगोपाल!

लोभी—जयगोपाल! आओ आओ, पधारो विराजो, विराजो, आज आप लोगो ने बडी कृपाकी, जल बल की सेवा बताइये?

दुनी०—सब आपका ही है, यहा भी आपका वहा भी आपका, क्योजी सागरमल?

साग०—सत्य बचन महाराज!

लक०—लालाजी ! मुझे बहुत देर हो गई है, दूर जाना है, व्यर्थ मेरी मंजिल खोटी करने से क्या लाभ, मेरा हिसाब चुकता कीजिये।

दुनी०—कैसा हिसाब, कैसा किताब, तेरा क्या मतलब है ?

लक०—आप लोग जरा इन्साफ करे, आज पाच वर्ष से बिना नागा आधी हो अथवा वर्षा, मेरा एक बोझ लकडिया लालाजी के यहा डालना नियम था, जिसमे आधी चदन और आधी कील हुआ करती थी। किन्तु लाला साहिबने आज तक हिसाब नही किया, एक पैसा भी नही दिया। सेठ लोगो ! आप दयावान है, मेरा हिसाब करके जो कुछ रुपया मेरा निकले मुझे दिलवादे।

साग०—लो साहिब, आज मालूम हुआ लोभी से लाला लोभी-लाल कैसे बने, मैं भी कहू यह हुन कहा से बरसने लगी।

गिनी०—हा भाई ईश्वर की माया है, जो बेईमान है वही फूलते फलते हैं, और ईमानदार दाने दाने को तरसते है।

उजा—जब मौत मुख दिखायेगी, सारी चतुराई धरी रह जायेगी, भला फिर लाला लोभीलाल जी !

साग०-जवाब नही देते गोया ऊंघ गये।

दुनी—कैसे चुप हो गये ?

गिनी०—कहो लाला जी ! अब क्या इरादा है ?

उजा०-ऐसा मालूम होता है मानो फौजदारी पर आमादा हैं।

साग०–कहो साहिब क्या पचायत इकट्ठी की जावे ?

उजा०–यह सूरत और यह करतूत ?

लोभी–आप लोग मुफ्त का कष्ट उठाते हैं, व्यर्थ बात बढाते है, हिसाब किताब किस बात का जो कुछ दो चार रुपये निकलते होगे वे दे दिला दिये जायेंगे ।

गिनी०—तुम एक दो चार बताते हो, यह हजारो का हिसाब कह रहा है।

साग०–वाह भई वाह, ऐसा हाथ मारा कि पाचो घी मे और सिर कढाही मे ।

(नवयुवक सिर खुजाने के बहाने सिर से साफा गिराता है)

लोभी—(देखकर) कौन रायसिह की पुत्री बीना ! राजकुमारी तुम कहा ?

बीना—तुम्हारी करतूत देखने के वास्ते जहा मेरा पति वहा मैं, कहो हिसाब देते हो या दरबार का द्वार का खटखटाया जाये, दीवान साहिब को बुलाया जाये ?

लोभी–अच्छा जो हुआ सो हुआ, तुम राजकुमारी हो, राज कन्या हो, सारी प्रजा तुम्हारा आदर करती है, मै बिना हिसाब किये ही एक बडी रकम भेंट करता हू।

बीना—तो मानो मैं भिखारन हू, आपने माल लिया ही नही, आप मुफ्त में यह रकम दे रहे है।

गिनी०—नही जी हिसाब जरूर किया जायेगा।

दुनी०—जिसमे फिर किसी को पछतावा न रह जाये, शिकायत

का मौका न आये।

साग०—जो कुछ हो आज हो कल पर न टाला जाये।

लोभी—बाप रे बाप, हायरे गजब! मैं ने ऐसा नही सोचा था, अच्छा भाई तुम ही इसका फैसला करदो, मामले को अधिक न बढाओ।

गिनी०—(बही खाते आदि देखकर) राजकुमारी जी! आज तक का हिसाब बारह लाख पाच हजार तीन सौ सत्तर रुपया होता है।

ऊजा०—बस जी एक चौथाई लाला साहिब के पास रहने दो बाकी रकम राजकुमारी के हवाले करो।

वीना—नही सेठ साहिब, बिचारा मर जायेगा, आधा आधा कर दिया जावे।

साग०-जैसी आप की इच्छा।

दुनी-जाओ लाला लोभी राम! आधा रुपया अभी लकडहारे को देदो।

लोभी-जो आज्ञा। (चारो लाला चले गये)

लोभी-(लकडहारे से)आप यहा बैठिये, मैं रुपया लेकर आता हू।

लक०—जरा जल्दी आना, देर न लगाना।

लोभी—अभी आया। (गया)

लक०-प्रिय! तुमने इस समय बडी चतुराई से रुपया वसूल किया, अन्यथा यह देने वाला न था।

वीना-प्रभो! यह सब आपका प्रताप हैं और ईश्वर की दया है।

डूबकर नही मर जाते हो —

बडा एक तीर मारोगे बडा ही यश कमाओगे,
दुखी को और भी दुखके भवरमे गर फसाओगे।
रहे यह याद भी लेकिन नही कलियुग यह करयुग
यह जा है वह यहा जैसा करोगे वैसा पाओगे।

विज०—अस्तु, यदि तू इस युग को कर युग बताती है, तो फि
बार बार क्यो रोती है, पछताती है —

ख्याल पेशो पस बेफायदा है आपका,
हुआ तकदीर से वह ही जो होना था।

वेला—मुझे इस जाल मे फसा कर यहा लाने से और यूं सता
से क्या लाभ ?

किसी की सहायता के लिये चले आते है।

बेला—तू क्या देख सकता है, तुझमे देखने की शक्ती ही नही —

(दाहा)— आख बन्द मति मन्द है दीखत नाही ठौर,
इन नैनन से देखिये छाये रहे चहु ओर।

जब हिरण्यकश्यप के घोर सताप से दुखी होकर प्रहलाद ने उनको पुकारा था, तो नरसिह बनकर उन्होने अपने भक्त के दुख को टारा था, गज का जल के अन्दर केवल हरि नाम ही सहारा था, उन्होने राम बनकर रावण जैसे राक्षस को मारा था। वह सबकी सुनते आये है, मेरी भी सुनेगे —

मनकूश हैं नख्लो हजर आखो के तारे रामके,
बर्गो शजर नगमा सिरा है हर घडी इस नामके

विज०—तो तू ईश्वर क भय दिखाकर मुझे डराकर मेरी कमजोरी से लाभ उठाना चाहती है —

खुलेगी क्या गिरह किस्मत की इन कमजोर हाथो से,
कही पत्थर हुआ है मोम ऐसी ऐसी बातो से।

बेला—म्लेक्ष ! तू मेरी नम्रता भरी बातोका उल्टा अर्थ लगाना है, पत्थर को मोम कौन बनाना चाहता है ? यद्यपि मै अबला हू, स्त्री हू, तथापि वीरता के साथ दुख तथा आपत्ति का स्वागत करने की सामर्थ रखती हू, तुम पुरुष होकर एक नारी को अपने प्रपंचमे फसाते हो और इस पर खुश होते हो, इतराते हो, चुल्लू भर पानी मे

लक०–प्यारी यहा से रूपया लेकर अपनी माता का श्राद्ध कर गया जी चलो।

बीना–जरूर स्वामी जी।

लोभी–(रूपया लाकर) लीजिये रुपया हाजिर है।

लक०–(रुपया लेकर) राम राम!

लोभी–राम राम! (गये)

अंक २ दृश्य ४

जंगल दरिया का किनारा

(विजयसिंह बेला को बालो से पकडे घसीटता हुआ लाता है)

बेला–दुष्ट, दुराचारी, पापी, राक्षस, निर्लज्ज, बेहया, हया कर! निर्दयी, दया कर! डर, डर, तीनो लोक के परमात्मा से डर, और उस समय का ध्यान कर जब मैं दोनो हाथ उठा कर ईश्वर से तेरे नष्ट होनेकी प्रार्थना करू। हे अन्तर्यामी! तुम सबके मन का भेद जानते हो, तुम देख रहे हो!

विज०–लोगो ने ईश्वर को भी कोई सिपाही या दारोगा समझ रखा है, जो फरियाद लेकर उसके दरवाजे पर दौडे जाते हैं, हमने तो कभी नही देखा कि वह अपने दल बल सहित

किसी की सहायता के लिये चले आते है।

बेला—तू क्या देख सकता है, तुझमे देखने की शक्ती ही नही—

(दोहा)— आख बन्द मति मन्द है दीखत नाही ठौर,
इन नैनन से देखिये छाये रहे चहु ओर।

जब हिरण्यकश्यप के घोर सताप से दुखी होकर प्रहलाद ने उनको पुकारा था, तो नरसिह बनकर उन्होने अपने भक्त के दुख को टारा था, गज का जल के अन्दर केवल हरि नाम ही सहारा था, उन्होने राम बनकर रावण जैसे राक्षस को मारा था। वह सबकी सुनते आये है, मेरी भी सुनेगे—

मनक़ूश है नख्लो हजर आखो के तारे रामके,
बर्गो शजर नग़मा सिरा है हर घडी इस नामके

विज०—तो तू ईश्वर क भय दिखाकर मुझे डराकर मेरी कमजोरी से लाभ उठाना चाहती है—

खुलेगी क्या गिरह किस्मत की इन कमजोर हाथो से,
कही पत्थर हुआ है मोम ऐसी ऐसी बातो से।

बेला—म्लेक्ष! तू मेरी नम्रता भरी बातोका उल्टा अर्थ लगाता है, पत्थर को मोम कौन बनाना चाहता है? यद्यपि मैं अबला हू, स्त्री हूं, तथापि वीरता के साथ दुख तथा आपत्ति का स्वागत करने की सामर्थ रखती हू, तुम पुरुष होकर एक नारी को अपने प्रपंचमे फसाते हो और इस पर खुश होते हो, इतराते हो, चुल्लू भर पानी मे

डूबकर नही मर जाते हो—

बडा एक तीर मारोगे बडा ही यश कमाओगे,
दुखी को और भी दुखके भवरमे गर फसाओगे।
रहे यह याद भी लेकिन नही कलियुग यह करयुग
यह जा है वह यहा जैसा करोगे वैसा पाओगे।

विज०—अस्तु, यदि तू इस युग को कर युग बताती है, तो फि बार बार क्यो रोती है, पछताती है—

ख्याल पेशो पस बेफायदा है आपका,
हुआ तकदीर से वह ही जो होना था।

बेला—मुझे इस जाल मे फसा कर यहा लाने से और यूं सता से क्या लाभ ?

विज०—यह तेरी भूल है, हम तुझे विपद की भयानक खाई स निकाल कर सुख तथा आनन्द के शिखर पर चढाने क यत्न करते है तू हम ही पर अत्याचारी होने का दो लगाती है, और आने वाले सुख को दुःख बताती है। मूर्ख स्त्री! हमारी कृपा की तरफ देख और अपनी मूर्खता का ख्याल कर।

बेला—मेरे पिता को धोका देकर मेरा विवाह राजकुवर के बदले धमलू माली से कराना, यह तुम्हारी कृपा का पहला नमूना था, जबर्दस्ती मुझे घर से लाना और धमलू के घर पर मेरा अपमान करना तुम्हारी दूसरी कृपा था,

फिर उस से भी अधिक कष्ट देने के लिये मुझे यहा लाना तुम्हारी कृपा की तीसरी तस्वीर है —

कीना खिजा को और भी है चमन के साथ,
होना है और क्या क्या अभी दिले पुर मह्न के साथ ॥
बाकी रहे न कुछ हवस ओ सितम शुआर,
किस्मत की मेरी चाल हो चर्खे कुहन के साथ।

विज०—यह मेरा अहो भाग्य और खुश किस्मती है कि तुमने मेरी प्रत्येक इच्छा को पूर्ण करने का विचार कर लिया है। बस, अगर तुम मेरे अरमानो को निकाल कर मेरे दिल मे घर बना लो, तो फिर जालिमसिह या किसी और का क्या साहस है कि तुम से आख मिला सके —

आओ तो सही तुम मेरे दरमा बन कर,
बैठो तो जरा आख मे महमा बन कर।
दौलत हो मेरी तुम ही मसीहा मेरे,
ममनू हू जो आये हो दरमा बन कर।

बेला—विजय जरा साफ साफ कहो।

विजय०—बेला! साफ साफ सुन कर क्या करोगी, बस समझ लो कि —

आबे कौसर हो तुम मेरी बका के वास्ते,
तुम दवा हो मरीजे लादवा के वास्ते।

बेला—अर्थात्?

विजय—अर्थात् यह कि मै इस जुल्फ गिरहगीर का असीर हूं,

तुम किस्मत हो और मै तहरीर हू।

बेला—इस जुल्फ का ?

विजय—हा, हा, इसी जुल्फ का असीर, तेरी मुहब्बत का फकीर, बोल तो, खामोश क्यो हो गई —

है छिपी आख के परदे मे यह सूरत तेरी,
मुझ पे कब्जा किये बैठी है मुहब्बत तेरी।
मुझ को दीवाना बनाया है। इसीने तेरा,
मै नही हू गुनहगार है चाहत तेरी।

बेला—इतने अजखुदरफ्ता न हो, होश मे रहो, अक्ल न खो, फव्वारे की भाति उछल कर न चल, कदाचित गिर पडे —

मत फूल यहा शाख गुल पे बैठ इन्दलीब,
ऐसा न हो कि पीर गरदू से हवा चले।

विजय—कुछ परवाह नही अगर कुदरत अपनी तमाम ताकतो को साथ ले कर भी मुझे तुझसे या तेरे प्रेम से बाज रहने की नसीहत करे, तो भी मै बाज रहने वाला नही, बेला, प्यारी बेला ! यह तेरे प्रेम समुद्र का तूफान किसी चीज से रुकने वाला नही।

बेला—तुझे मालूम है कि अनुचित प्रेम का नतीजा क्या होता है।

विजय—क्या होता है ?

बेला—जब समुद्र मे तूफान आता है तो चढी हुई लहरें किनारे को तोडकर अपने साथ बहा ले जाती है। विजय ! प्रेम

का मार्ग बडा कठिन है, बडे बडे तैराक यहा आकर ठोकर खाते है, एडिया रगड रगड कर मर जाते हैं।

विजय—मगर याद रहे, बेला मै वह तैराक नही —

जलाने का मेरे मौका मिले क्यो चर्ख पुरफनको,
लगादू आग पहले बर्क के गिरने से खिरमन को।

बेला—किन्तु विजय, मुह से बात कहना तो है आसान, और उसे पूरा करना कठिन महान।

विजय—बेला क्यो मुझे बनाती है, मै कच्चा खिलाडी नहीं, फरहाद की तरह अनाडी नही, जो तेशै से सिर फोडा करू, ख्वाह मख्वाह पत्थर तोडा करू।

बेला—प्रेमकी पाठशाला के नये विद्यार्थी! प्रेमके पहले पाठ मे ही भूल गया—

खून रग मजनू से निकला फस्द लैला ने जो ली,
इश्क मे तासीर है पर जज्ब कामिल चाहिये।

व्यर्थ गाल बजाने और बात बनानेसे क्या लाभ—

है मुहब्बत तो मुहब्बत मे असर पैदा कर,
चोट खानेकी तमन्ना है जिगर पैदा कर।
जज्बये उल्फत से मुझे चैन न आये पल भर,
मेरे दिल मे जो हो पहले तो इधर पैदा कर।

अन्यथा यो तो अपने सतीत्वको बिगाडने और तेरे पाप कर्मको सवारने वाली नही, तेरी चिकनी चुपडी बातो

में आने वाली नहीं।

विजय—बेला, मेरे प्रेम सन्देशका यह तिरस्कार ?

बेला—बस अधिक हुज्जत बेकार।

विजय—मालूम हुआ सीधी उगलियो घी निकलने वाला नही

बेला—जिसे प्रत्येक मनुष्य सुगमता से हजम करले य वह तर निवाला नही।

विजय—अगर नही तो बनाया जायेगा।

बेला—ईश्वर के कोप से डर वरना मु हकी खायेगा।

विजय—खैर देखा जायेगा। (पकडना चाहता है)

बेला—हाय हायरे लोगो दौडो, दौडो, जल्दी आओ, एक अबला को बचाओ।

विजय—बुलाओ, बुलाओ, अपने ईश्वर को सहायता के लिये बुलाओ।

बेला—ईश्वर हर हालमे सहायक है, किन्तु विजय, एक दुखी और विवश अबला की अन्तिम अभिलाषा ?

विजय—क्या ?

बेला—केवल दो घटे की मुहलत।

विजय—हा हा हा हा हा, अगर यही मुहलत दरकार थी, तो ख्वाह मख्वाहकी हुज्जत बेकार थी। सोच ले दो घटे तक अपनी बहतरी और बुराई को अच्छी तरह सोच ले।

बेला—ईश्वर तेरा भला करे।

विजय—मगर इस तरफ आओ, मै सोता हू तुम मेरे चरण

दबाओ, और नीद आने के लिये कोई सुरीला गीत गाओ।

बेलाका गाना

अजब है आज कुछ हाल दिले बेताबो मुजतिर का,
बदल डाला इसी बे महर ने नकशा मुकद्दर का।
गिला क्या हो बया इस कीना जू जालिम सितमगर का,
खलिश ने चर्ख की रक्खा मुझे दर का न उस घर का।
नवाजिश गर फलक की यूं इसी सूरत मे होनी थी,
मेरा दिल भी दिया होता मेरे पहलू मे पत्थर का।
मुझे इस वादिये गम से निकाले खिज्र को मतलब,
लगे उनको भला क्योकर यह आसू दीदये तर का।
कभी फुरसत नही देती बुरी किस्मत हमे 'जन्नत',
मुझे समझा मुक़द्दर ने है क्या अपने बराबर का।

, काम का गुलाम, क्रोधका भूत सो गया, थोडी देर के लिये मृतक के समान चुप चाप हो गया, बेला भाग, मगर किस ओर भागू, कहा जाऊ, किसको अपनी रक्षाके लिये बुलाऊ ? आह क्या मेरी तकदीरकी तरह मेरे अख्तर भी बदल गये, दुःख के समय सहायता करने वाले देवता भी सो गये ? बेला, तुझसे तेरे पाव तो नही अलग हो गये ? भाग, किन्तु किधर भागू कहा जाऊ, हाय, हाय, मेरे दिमागमे चक्कर आता है, मेरा दम घुटा जाता है।

(मूर्छित होकर गिरती है तारा रानीका प्रवेश)

तारा–माधो यह क्या ?

माधो––एक स्त्रीका मृतक शरीर ।

तारा—देख लिया जल्दी कर, इधर आ, इस शुभ कार्य मे हाथ लगा ।

माधो—मीरासी को सारगी बजाते तो सबने देखा, मगर लावारिस मुर्दे उठाने की यह पहली नजीर है ।

तारा—माधो अगर इसने किसी रसिकको अपने नेत्र बाण से मारा तो ?

माधो—फिर पौ बारह ही पौ बारह । (लेगये)

अंक २ दृश्य ५

खण्डहर

(धमलू का प्रवेश)

धम०—किस्मत —

किस चीज को कहते हैं यह किस्मत क्या है,
माथे मे करे घर इसे ताकत क्या है ?
मर्दो के मुकाबिल हो यह औरत तोबा,
क्या है बिचारी इसे ताकत क्या है ?

यदि एक बार मैं किस्मत को कहीं चलता फिरता देख पाऊ, तो इतनी जूतिया लगाऊँ, इतनी जूतिया लगाऊ कि उस लम्बे बालो वाली डायन को छटी का दूध याद आ जाये, और उन सब लोगो का जो तकदीर के हाथो दुखी है बदला

निकल जाये। मगर जितना मै इसके पीछे दौडता हू, उतना ह
यह आगे को दौडती है, मैं तो थक कर इस कदर चूर हुआ कि
चलने से मजबूर हुआ। मगर उस बदनसीब किस्मत को
पाना था न पाया, खैर परन्तु यारो के चुगुल से निकल कर
कहा जा सकती है, अगर आज नही तो कल पकडी जायेगी
और अपने किये की सज़ा पायेगी। अब जरा सो जाऊं, आराम
पाऊं, जिससे सफर और भाग दौड की थकान दूर हो।

(सोता है और स्वप्न अवस्था में किस्मत को देखकर कहता है)

धम०—सुन्दरी तू कौन है ?

किस्मत—मैं, मैं किस्मत हू तूने मुझे याद किया, मैं तेरे पास आई।

धम०—मैं ने तुझे क्यो याद किया ?

किस्मत—इसलिये कि तू मेरा मुह नोचे, खसोटे, मेरी बोटी बोटी चील और कौवों को खिलाये। अब मै तेरे पास आ गई, जो कुछ तू कर सके उसमे गफलत न कर, जितना तुझसे मारते बने मार।

धम०—क्या कोई मर्द भी ऐसा नामर्द हो सकता है, कि औरत पर हाथ उठाये, मगर इन्साफ को हाथ से न दो और सोचो:—

मुन्सफी तुम पर ही ठहरी है बताओ तो सही,
जुल्म इस तरह भी करता है किसी पर कोई।

किस्मत—मै किस्मत हू जिस पर तू बद किस्मत जालिम होने का

इलजाम लगाता है जिसे तू खतावार ठहराता है, वह बेकुसूर और बे खता है, तू अन्धा है, हकीकत की आखो से देख हम दोनों मे कौन खतावार है ?

धम०—वह जिसने मुझे बद किस्मती के गढे में गिराया, अपनी अवस्था से खुश रहने वाले को सता सताकर ऐसी ऐसी तकलीफो मे फसाया, जा और अपनी राह लग —

पछतायेगी फिर हमसे शरारत नहीं अच्छी,
यह शोख निगाही दमे रुखसत नही अच्छी।

कि०— भूले से कहा मान भी लेते है किसी का,
हर बात मे तकरार की आदत नही अच्छी।

तू ने अगुली पकडी, किस्मत का सहारा चाहा, हमारी शरण मे आया, हमने क्षण मात्रमे धमलू माली से राजकुवर बनाया, बेला से तेरा विवाह कराया। नराधम ! हीन ! तू आई हुई लक्ष्मीको भी न रख सका ———

ख्वाब मे किस्मत तेरी बेदार होकर रह गई,
दाग्वे दर्द दिले बीमार होकर रह गई।

धम०—तो इसमे मनुष्य का क्या अखत्यार है, यहा पर भी तू ही कुसूरवार है —

किस्मते इन्सा अगर बेदार होकर रह गई,
बख्त से बद बख्त वह नाचार होकर रह गई।
बर सरे ज़ुजदा रहे ख्वाहिशे गर तू न हो,
तू ही मारे आस्ती थी मार होकर रह गई।

किस्मत—मूर्ख ! तू अभी तक किस्मत का मतलब नही सम

धम०—क्यो नही समझा ।

कि०—भला बता तो क्या समझा ?

धम०—भोले भाले इन्सानो को गुमराह बनाकर, मनोभ
दृश्य दिखा कर, निराशा के कटकमय जगल मे फ
वाली कुदरत की एक आडी तिरछी लिखावट का
जो ललाट मे लिखी बतलाई जाती है, किस्मत है ।

कि०—इस किस्मत के भ्रमजाल के काटो मे फसकर उ
निकलना भी तो किस्मत ही है ।

धम०—गरदाब से किस्मत के किसी को भी निकलते नही देख

कि०—अज्ञान ! तू अब तक भी किस्मत का अर्थ नही सम
सका ।

धम०—तो तू समझा दे ।

कि०—मनुष्य जो काम अपने परिश्रम तथा साहस से करता
उसके फल का नाम किस्मत है ।

धम०—और ?

कि०—जो लोग बुद्धि और परिश्रम से काम करते है, उसके फ
भी उनको अच्छे मिलते है ।

धम०—और ?

कि०—जो लोग अपने समस्त कार्य किस्मत के अधीन छोडक
आलस्य से काम करने है, उनका परिणाम कभी अच्छ
नही होता ।

धम०—और वे ही बुरी किस्मत वाले कहलाते है।

कि०—नि सन्देह।

धम०—तो क्या मै ने बेला के विवाह वाला काम परिश्रम से नही किया ?

कि०—किया तो जरूर किन्तु अन्तिम मजिल मे मुह के बल गिर पडा, यदि तुझ मे कुछ साहस तथा धैर्य होता तो कभी जालिमसिह तुझसे बेला को न छीन सकता, किन्तु तू ने कुत्ते की भाति दुम दबाकर भागने मे ही अपनी भलाई समझी, इस पर भी किस्मत को दोष देता है।

धम०—तू सच कहती है किन्तु अब क्या करू ?

कि०—जो जी मे आये, मै तो तेरे हाथ से मार खाने आई हू।

धम०—भला किस्मत को कौन पलट सकता है।

कि०—किस्मत को मर्द पलट सकते है, तुझ जैसे तकदीर के गुलाम किस्मत को क्या पलट सकते हैं।

धम०—तो क्या किस्मत भी पलटी जा सकती है ?

कि०—क्यो नही।

धम०—किस तरह ?

कि०—जिस तरह गरीबी को अमीरी से, कमजोरी को ताकत से, अधर्म को धर्म से, और बेइज़्ज़ती को इज्जत से पलटा जा सकता है —

काबू मे हो इन्सा के गर्दिश भी जमी की,
कब चर्ख को ताकत है चुना और चुनीको।
इन्सान भी इन्सान है वह सामने जिसके,
भूले है फिरिश्ते भी रदीफ हा य नही की।

धम—तो क्या किस्मत पिछले जन्म का फल नही है ?

कि०—क्यो नही।

धम०—जब पिछले जन्म का फल मिलता है तो इस जन्म किस तरह भलाई हो सकती है, मुझे चक्कर मे फसाओ, साफ साफ बतलाओ।

कि०—तू अपने पिछले जन्मके कारण माली के घर उत्प हुआ, देख बेल और पौदे लगाने की विद्या को तूने कितन जल्दी प्राप्त किया। यदि इस जन्म मे अधिक श्रम औ यत्न करता तो देखते २ कुछ से कुछ हो जाता औ बडा आदमी कहलाता।

धम०—तो तेरा मतलब यह है कि मैं माली ही बना रहू।

कि०—मन्द बुद्धि मनुष्य! मै ने ऐसा कब कहा, जिस तरह तू ने राजकुमारी के साथ विवाह करने का उत्साह किया, उसी प्रकार के विचार मनमे उत्पन्न होने लगे. विचार उत्पन्न होते ही वैसा ही सामान तय्यार होगया, कुदरत मे प्रत्येक प्राणी के विचारो की रक्षा की कुद-रत मौजूद है। अस्तु, कुदरत ने तेरे विचारो का भो

साथ दिया। मूर्ख यदि तू कुदरत के संयोगो का पक्के विचारोंसे साथ देता तो क्या सम्भव था, कि बेला तुझे मिलकर भी तेरे हाथ से निकल जाती।

धम०—बेला का मिलकर छिन जाना भी तो किस्मत ही है।

कि०—कर्मके फलो को बिगाड देना भी तो किस्मत ही है।

धम०—यही तो अन्धेर है।

किस्मत—कुछ नही, समझ का फेर है।

धम०—तो बात यह हुई, कि अगर आदमी चाहे तो अपनी किस्मत पलट सकता है।

कि०—अवश्य इसमे सन्देह ही क्या है।

धम०—तब तो तू खडी रह मैं तुझे पकड कर अभी अपने अधीन करता हू। (पकडना चाहता है)

कि०—सावधान! मेरे समीप न आना, मुझे हाथ न लगाना।

(किस्मत अदृश्य होती है धमलू आश्चर्य मे रह जाता है)

अंक २ दृश्य ६

जंगल

(महाराज जोधपुर का अपने सभासद केशव सहित प्रवेश)

महाराज-केशव! देखो बन मे छोटी छोटी चिडिया कैसी खुशी से चहचहाती हुई इधर उधर उडती है, मृगो के झुण्डके झुण्ड कैसी स्वतन्त्रता से चौकडिया भरते हुये दौड लगा रहे हैं।

केशव—सत्य वचन महाराज ! इन छोटे छोटे जीवो ने जगत मगल मना रखा है, जगत कर्त्ता ईश्वरने वीराने से वी को भी आश्चर्य जनक वस्तुओ से सजा रखा है। य वस्तुये बहुत से मनुष्यो को अपनी ओर आकर्षित क मे चुम्बक का काम करती है, और वह इनमे लीन हाव आनन्द पाता है।

महा०—केशव, तुम्हारी भूल है जगत मे कुछ ऐसे मनुष्य भी जिनको प्रकृति की सुन्दर से सुन्दर वस्तु अपनी ओ आकर्षित करने मे समर्थ नही हो सकती।

केशव—क्षमा कीजिये महाराज, मैं इस विषय मे आपसे सहमत नही।

महा० - शावाश केशव ! मैं तुम्हारे इस स्पष्ट कथन से अति प्रसन्न हुआ हू, क्षमा मॉगनेकी आवश्यकता नही। विद्यार्थी बनने ही से मनुष्य कुछ पाता है, समुद्र मे गोता लगाने ही से मोती हाथ आता है।

केशव—भला महाराज, जगत मे कौनसा ऐसा मनुष्य है, जिसको प्रकृति की मनोभावन वस्तुये अपनी ओर आकर्षित करने मे समर्थ नही हो सकती ?

महा०—जीवित रहते हुये भी, केशव, मैं मृतक हू।

केशव—क्या आप ?

महा०—हा मै —

राहतो आराम दुनिया के मुझे मफक़ूद हो गये,
वह शजर जिनमे समर आनेको थे नाबूद हो गये !

केशव—महाराज ! आप क्या कहते है ?

महा०—जो कुछ कहता हू, सच कहता हू —

राग़िब हो दिल किसी की तरफ दिल नही रहा,
लायक किसी की कद्र के महमिल नही रहा ।

केशव—महाराज ! इसका कारण ?

महा०—चापलूसी, खुशामद ।

केशव—कैसी चापलूसी ? किसकी खुशामद ?

महा०—खेद, प्रिय केशव ! पिछली बाते, पिछला समय, पिछला आनन्द उल्लास सब समाप्त हो गये । आज प्राय सोलह वर्ष का जमाना होने को आया, जब मैं ने अपने हाथ से अपनी अर्धांगिनी को बन मे भिजवाया ।

केशव—शोक ! अति शोक ! !

महाराज—इससे भी अधिक शोक कि वह गर्भवती थी ।

केशव—उस गर्भ का हाल कुछ सुनने मे आया ?

राजा—कुछ भी नही ।

केशव—तलाश की, ढूडा, ढुडवाया ?

महाराज—हज़ार तलाश की, लाख ढूडा, ढुडवाया, परन्तु उस आदर्श रत्न का कुछ पता न पाया ।

केशव—तो महाराज अब क्या इरादा है ?

राजा—दिल वैराग्य पर आमादा है, अथवा आत्म हत्या का

इरादा है।

केशव—ऐसे विचारो को हृदय से निकाल दीजिये, अकाल मृ
मरने वाले मनुष्य की आत्मा को परलोक मे भी सुख
मिलता —

काम क्या जिस काम पर खलकत तमाशाई हुई,
मौत वह अच्छी नही आये जो बिन आई हुई।
कुछ भी हासिल न हुआ और मुफ्त रूस्वाई हुई,
बाद मुरदन भी फिरेगी रूह घबराई हुई।
बहर आजादी कजा गर आपको मरगूब है,
मौत की इन राहतोसे जिन्दगानी खूब है।

महाराज—किन्तु प्रसिद्ध तो यह है कि हर एक जिन्दगानी
पश्चात् मौत और मौत के पश्चात् जिन्दगानी है, क्या तुम
इसके मानने मे भी कुछ आनाकानी है ?

केशव—बिलकुल ठीक और सच्चा कौल है।

महा०—फिर आत्महत्या करने मे क्या हानि है ?

केशव—इस ससार मे प्रत्येक वस्तु की आयु निश्चित है, अतएव
आत्मा भी आयु के बधन से मुक्त नही।

महा०—अर्थात ?

केशव—आत्मा की समस्त वासनाये पूर्ण होनेसे पहले उसे शरीर
रूपी गिलाफसे मुक्त करा देना उसके सताप को बढा
देना है।

महा०—नि सन्देह, किन्तु इसमे हानि ही क्या है ?

केशव—बडी हानि है :—

अब तो घबरा के यू कहते हैं कि मर जायेगे,
चैन मर कर न मिला तो किधर जायेगे।

महा०—खैर देखा जायेगा।

केशव—खाई से निकल कर कुवें मे गिरना बुद्धिमानो का काम नही।

महा०—यदि आत्महत्या करनेमे हानि है तो अच्छा ससार त्यागी होने मे तो कुछ हानि नहीं ?

केशव—महाराज ! शास्त्र की आज्ञा के विरुद्ध प्रत्येक काम आत्मिक अपराध है।

महा०—क्या यह भी अपराध है ?

केशव—हा महाराज, गृहस्थ-आश्रम के समस्त कर्तव्य पूर्ण किये बिना वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवेश करना भूल है।

महा०—तो मुझे अब ससार मे करना ही क्या शेष है ?

केशव—बहुत कुछ, ईश्वर की ओर से आप शासनकर्ता नियत हुए हैं, पृथ्वी के नाथ और प्रजा के पालक बनाये गये हैं, इस थाती को दूसरे के सुपुर्द किये बगैर वानप्रस्थ प्रवेश प्रजा तथा परमात्मा दोनों के समीप रूसियाही का कारण होगा, लोग आप को कायर कह कर पुकारेगे।

महा०—तो केशव आज से यह बोझ तुम्हारे सुपुर्द करता हू।

(ताज देना चाहता है)

केशव—न्याय कीजिये, क्या मै इसका पात्र और अधिकारी हू ?

महा०—जब कोई अधिकारी न हो ?

केशव—धैर्य के साथ प्रतीक्षा कीजिये —

उसे फज्ल करते नही लगती बार,
न निर आश हो उससे उम्मेदवार।

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदार—महाराज भोजन तय्यार है।

केशव—महाराज पधारिये, यात्रा की थकान को मिटाइ भोजन पाकर विश्राम पाइये।

(सब का प्रस्थान)

अंक २ दृश्य

नदी का तट।

(धमलू का प्रवेश)

धम०— अजब है आज कुछ हाल दिले बेताबो मुजतिर का
बया हो किस जबासे हाल इस बिगडे मुकद्दर का
दिखाया है तमाशा कब्ल महशर रोज महशर का।

(जालिमसिह आता है)

जालि०—महरबान दोस्त धमलू! तुम्हारी गुस्से भरी जाहिर कर रही है, कि अभी अभी तुम्हारा दुश्मन

धम०—बेशक इन्सान की जबर्दस्त दुश्मन।

जालि०—कौन ?

धम०—किस्मत।

जालि०—या वहशत!

धम०—वहशत नही किस्मत, किस्मत, यह किस्मत वह बेवफा रहजन है, कि इन्सान के बहतरीन हिस्से मे घर रखते हुए भी बदतरीन दुश्मन है। डरो, डरो, इस पुरफन से डरो, दुनिया वालो! दुनिया मे कोई बुरा काम न करो।

जालि०—क्यो ?

धम०—बुरे कामो से कर्म बिगडते है।

जालि०—कर्म बिगडने से क्या होता है ?

धम०—किस्मत बिगडती है, किस्मत से दुनिया और फिर ईश्वर बिगडते है।

जालि०—और ईश्वर के बिगडनेसे ?

धम०—ईश्वर के बिगडने से लोक और परलोक के अपार सुख बिगडते है।

जालि०—बेवकूफ! खा, पी, पहन और मौज कर, रोज फर्दा कयामत होने वाली है, फिर न तू रहेगा, और न तेरा अरमानो से भरा दिल, न दिल की तमन्नाओ को पूरा करने के सामान।

धम०—वाह हजरत वाह, अगर आप जैसे उपदेशक दो चार और हों, तो हजरत इन्सान खुदा परस्ती के गलत रास्ते से हट कर शैतान परस्ती की सीधी और सच्ची राह पर

चलने लगे ।

जालि०—तो क्या जो कुछ मैं कह रहा हू गलत है ?

धम० – नही जनाब, बिलकुल दुरुस्त, शैतान को रास्ता वाले, फिरऔन से हाथ मिलाने वाले आप ही है ।

जालि०–हमारे सामने ऐसे गुस्ताखाना कलाम !

धम०–फरेब के बन्दे, शैतान के मुरीद, दौलत के गुलाम

जाल०–बस रोक जबान बद लगाम ! क्यो मेरी तलव बेनियाम बनाता है, क्यो अपनी जान पर आफत है ! मूजी बेईमान ! याद रख खींच ली जायेगी बाहर जबान !

धम०–जबान खिचवा लोगे मगर मेरे दिल पर लिखी हुई यत को क्योंकर धो डालोगे —

करीब है अब तो रोज महशर छुपेगा कुश्तो का खून क्यो
जो चुप रहेगी जबान खजर लहू पुकारेगा आस्ती व

जालि०–कुछ परवाह नही अगर आस्तीन का खून पुक तो आबे तेग से धोकर लहू के उस नाचीज कत हमेशा के लिये खामोश बना दिया जायेगा ।

धमलू–अगर आस्तीन के खून को तेग के घाट उतारोगे तुम्हारा सिर, सिर की अक्ल, तुम्हारी आखे और अ मे मकतूल का अक्स, तुम्हारी आत्मा, कत्लगाह जर्रा जर्रा जल का पत्ता पत्ता, तुम्हारे बरखिलाफ श

दत पर आमादा होगा, फिर अपनी नादानियो पर पछ-
ताओगे, अफसोस के हाथ मल मल कर रह जाओगे।

जालि०-और जब वक्त आयेगा तब देखा जायेगा। सिर झुका और मरने के लिये तैयार होजा।

धम०-चलाले चलाले, एक बेगुनाह पर खञ्जर चलाले।

(सोता हुआ विजय नींद से चौक कर हाथ पकड लेताहै।)

विज०-बेला, बेला!

जालि०-नही, नही, धमलू, विजय! ठहर क्यो घबराता है, धमलू के बाद बेला का नम्बर भी आता है।

विज०-है तो क्या बेला आप के पास नही?

जालि०-बेला का मेरे पास क्या काम।

विज०-तो बस हो चुकी तुर्की तमाम।

जालि०-मगर बता तो क्या हुआ बेला का परिणाम?

विज०-महाराज! बेला भाग गई।

धम०-चलो अच्छा हुआ एक की किस्मत तो जाग गई।

जालि०-क्या कह रहा है?

विजय-महाराज! सत्य कह रहा हू।

जालिम-विजय! बन्दा इन बातो को खूब जानता है, जालिमसिह पुराने गुनाहगार की नीयत को पहचानता है। बेला खुद नही भागी बलिक तू ने भगा दी है, क्या बुत बना खडा है गोया ऊंघ गया।

धम०-क्यो जवाब नही देता क्या साप सूंघ गया?

विजय—सफर की नकान, पियास की शिद्दत, गरमी की हिद्द के कारण निद्रा का आक्रमण होने से मैं सो गया, औ आपका अनमोल रत्न मेरी गफलत से खो गया ।

जालिम—बेला नही खोगई, बलिक तेरी किस्मत सो गई । दे इस तलवार से तुझे चौरंग बनाता हू, अपने खजर क प्यास तेरे खून से बुझाता हू ।

विजय—क्षमा करदो स्वामी ! ईश्वर भी तीन अपराध माफ करते है आप एक ही क्षमा करदो ।

जालिम—क्यों अपनी चिकनी चुपडी बातो से मुझे भुलाता है ।

धम०—जो जैसा करता है वैसा पाता है ।

जालिम—खौफ खायेगी कयामत भी मेरी तलवार से,
खून का दरिया बहेगा तेग जौहर दार से ।
रहम औ बख्शिश की सदा आये दरो दीवार से,
सरनिगू आये फलक शमशीर के एक वार से ।

विजय—तो क्या मेरी जान लेने का इरादा है ?

जालिम—बेशक, बन्दा ऐसे ही खूनी खेलो पर आमादा है।

धम०— क्या भला अपना हुआ इस पीर ना हिजार से,
अब मिलो आकर मसीहा अपने तुम बीमार से ।

विजय—मेरे अच्छे स्वामी !

जालिम—मूजी बेईमान ! अपने मालिक की दिलरुबा से आख लडाता है,, फिर भी आखों मे घुसा जाता है । बस अब तेरे वास्ते यही सजा है कि तू तलवार के घाट

उतारा जाये !

विजय—नही नही, मैं अपनी गुजिश्ता खिदमात के नाम पर अपील करता हू ।

धम०—राम, राम, राम, दुनिया मे ऐसे आदमी भी मौजूद है, जो नाशवान चीज के वास्ते हाथ जोडते हैं, गिडगिडाते हैं, पाव छूते हैं और बिछे जाते है—

आवाज मुझे शहर खामोशा से यह आई,
ले देखले अजाम जो दुनिया के लिये है ।
शद्दाद है, नमरूद है, यह जम की निशानी,
इतनी सी जमी वक्फ वह दारा के लिये है ।

जालिम—विजय हट, अलग हट, पत्थर के दिल मे खुशामद की जौंक लगने वाली नही, अब तेरी आई हुई मौत टलने वाली नही ।

वि०— जुल्फ आशिक को यही तर्ज वफा होती है,
क्यो यही चाहने वाले की सजा होती है ।

ध०— शोख चश्मो से मुरव्वत का नतीजा है यही,
बेवफाओ से मुरव्वत का नतीजा है यही ।

विजय-एक गलती का बदला सौ सौ बार चुकाऊगा, यदि अबकी बार मुझे छोड दोगे हजार बार काम आऊगा —

इस तरह बरबाद न कर अहले वफा को,
ढूडे से भी मिलते नहीं यह लोग दवा को ।

जालिम-धमलू ! चलो आओ इधर ओओ, मेरी तलवार का

इस्तिहान कराओ ! देखू यह विजय जैसे नमक हराम काम कर सकती है या नही ।

धम०—बहुत अच्छा तय्यार हू आप अपनी तलवार का इं हान फरमाइये, चलाइये, चलाइये, एक बेगुनाह की ग पर छुरी चलाइये ।

(जालिम कत्ल का इरादा करता है, विजय हाथ पकड लेता है)

विजय—महाराज ! जरा ठहरिये, सामने से कोई आ रहा ।

जलिम—है, यह तो रायसिह की बडी लडकी बीना है, अ अगर मेरी नजर गलती नही करती तो साथ आनेवा रायसिह का दामाद वही लकडहारा है । अहा, बीना शकल को भी ईश्वर ने खुद अपने हाथ से बनाया है

बल भी चितवन पर हसी के साथ है,
बाकपन किस सादगी के साथ है ।

इस सादी साडी मे इसका चन्द्रमुख कैसी शोभा दिख रहा है । ओफ ओह, बेला से तो बीना हजार दरजे अच्छी है अफसोस मै ने व्यर्थ धमलू को परेशान किया, और बेला क भी हैरान किया, अगर रायसिह से बीना के लिये कहता त वह जरूर मान जाता । धमलू !

धम०—सरकार ।

जालिम—मै तुम दोनो को माफ कर सकता हू, यदि तुम मेरा एक काम मे हाथ बटाओ, सहारा लगाओ ।

विजय—महाराज ! आज्ञा ?

जालिम–उस बीना के गिरफ्तार करने मे सहायता दो।

धमल्–हू, समय समय की बात है।

विजय–ओ हो महाराज यह कौनसी बडी बात है ?

जालिम–तो फिर क्या तरकीब की जाये ?

विजय–तरकीब बहुत आसान है, यह इलाका रुहेले डाकुओ का निवास स्थान है।

जालिम—हा खूब याद दिलाया, मैं जाता हू, तुम दोनो बीना और लकडहारे के कदम कदम पर निगाह रखो, मै उन लोगोमे से कुछ को लाता हूं, और उनके द्वारा बीना को गिरिफ्तार कर लकडहारे को सूली पर लटकवाता हू।

धम०–सिधारिये।

(जालिमसिह जाता है, लकडहारा और बीना का गाते हुए प्रवेश

लकडहारा –

सब वृक्ष लता फल फूल रहे शोभा है अनन्त अपार महा,
है फर्श बिछी नो घास हरी कण ओससे सुख सरसाये रहा।
क्या साफ बहे जल का झरना पिक सारस हस हे खेल रहे,
है रङ्ग बिरङ्ग कमल फूले मन मधुकर देख लुभाय रहा।
है धन्य प्रभु रचना तेरी दीख रही महिमा भारी,
ससार सभी है खेल तेरा रङ्ग भूमि मे आप हो आये रहा।
गुण गान करे पक्षी तेरा कोमल स्वर वृक्ष की डालन पर,
तू सबमे रमा फिर सबसे अलग फल फूलमे नाथ समाय रहा।

बीना–हे प्राण पति का प्रेम मुझे वह फूल तो मैं उसकी खुश्बू,

वह प्राण बने यह देह रहे तन मन मे प्रेम समाय रहा

लक०—प्रिय ! देखो गङ्गा का स्वच्छ और निर्मल जल किस प्रकार हिलोरें लेता हुआ बह रहा है। चन्द्रमा का शीतल प्रकाश लहरो मे पड कर कैसा आनन्दमय दृश्य बना रहा है। चलो आओ, जल को आखो से लगाये, सिर पर चढाये ।

(लकडहारे की भुजा से तावीज खुलकर गिरता है)

बीना—महाराज ! यह जल मे बहती हुई क्या वस्तु है ?

लक०—कुछ नही ।

बीना—कुछ नही, आप छिपाने का यत्न करते हैं, मै विश्वास के साथ कह सकती हू, कि इस पत्र मे आप का जन्म रहस्य गुप्त है । लाइये मैं खोलती हू, इसके पढने का सब से पहला अधिकार मेरा है ।

लक०—यदि इसमे तुम्हारे कल्पित विषय पर कुछ लिखा हो और उससे परिमाणित हुआ कि मैं नीच कुलमे उत्पन्न हुआहू तो तुमको दु ख होगा, मैं तुम को किसी प्रकार क्लेशित करना नही चाहता ।

बीना—नही महाराज ! मैं दु ख तथा सुख मे बराबर की हिस्सेदार हू, अब यदि आप उच्च कुल मे उत्पन्न नही है और नीचकुल मे उत्पन्न है तो भी सिवाय मृत्यु के और कोई मेरे और आपके सम्बन्ध को तोड नही सकता, इकरार कीजिये कि बुरा समाचार हो या भला, पढने के बाद यह पत्र आप मुझ देगे ।

लक०–ऐसा ही होगा।

बीना–अच्छा तो महाराज पढिये।

लक०—(पत्र पढता है)—

"इस पत्र के पढने वाले को चाहिये कि अपने आप को महाराज जोधपुर का उत्तराधिकारी जाने। महाराज से एक शर्त मे हार जाने के कारण मुझे बारह वष के लिये बन मे आना पडा, अपना वचन गर्भवती होते हुए भी निभाना पडा। घर से निकल कर साधु महात्मा का सहारा लिया, किन्तु परमात्मा की इच्छा से वह भी काल ग्रस्त हुए। उन्ही की कुटी मे एक लडका पैदा हुआ, मै उस बालक को लेकर नगर के किनारे एक झोंपडे मे रहने लगी। जब बालक की अवस्था सात वर्ष की हुई तो नगर मे व्याधि फैली, और प्रजा मरने लगी। मै ने यह समझ कर कि मेरा शरीर दु खों और क्लेशो से दुर्बल हो गया है, ज्ञात नही कब और किस समय काल आ जावे, और यह भेद गुप्त हो रह जावे, इस पत्र मे सब हाल लिख दिया है, पढने वाले को चाहिये कि वह स्वय महाराज के पास जावे, और अपना परिचय दे, यह पत्र दिखावे इति"।

बीना—महाराज अब क्या विचार है ?

लक०—पहले श्राद्ध और तर्पण से निश्चिन्त होकर फिर जोधपुर चलेगे, तुम यहा ठहरो मैं नाव लेकर आता हू।

बीना—जो आज्ञा।

(लकडहारे का जाना, जालिमसिह का आना)

जालिम—खुश हो कि विधाता ने तेरी सुन ली कि तुझे एक गरीब निर्धन के फन्दे से निकाल कर मुझसे मिला दिया।

बीना—कौन जालिमसिह, दुष्ट ! यह बता कि तूने मेरी बहन बेला का क्या किया ?

जालिम—बेला का और तेरा क्या मुकाबला, बस अब सीने से लगकर कलेंजा ठण्डा बनाओ —

आखो मे घर है जिसका वह सूरत है तुम्हारी,
है दिलमे गुजर जिसका वह हसरत है तुम्हारी।

बीना— मेरे नसीब मे गर्दिश है हर जमा कैसी,
यह चाल तूने निकाली है आस्मा कैसी।

जालिमसिह ! तू ने मेरी बहन को सताया, मेरे पिता के खून को रुलाया, वह सब चालाकिया तो चल गई, किन्तु मुझ तक तेरा हाथ न पहुच सकेगा, यदि तू ने जरा हाथ बढाया, तो सती नारी की जिह्वा से निकला हुआ शाप तेरी जानपर आया।

जालिम—भोली भाली यह बाते तो है खाली, आओ आखो मे बैठो और सीने मे घर बनाओ।

बीना—देख सावधान, मेरे पति आते होगे।

जालिम—तो आ, पहले दिखाता हू तेरे पति का परिणाम, और कम्बख्त फिर देख अपना अजाम।

(सीन ट्रासफर होकर लकडहारा गिरिफ्तार नजर आता है, बीना घबराती है, डाकू पकडा चाहते है, महाराज जोधपुर शिकार खेलते हुए इधर आ जाते है और बीना को बचाते है। टेबला)

ड्राप

अंक ३ दृश्य १

रास्ता

[जालिम, विजय तथा धमलू बातें करते नजर आते है]

जालिम–विजयसिह ! सब बना बनाया खेल बिगड गया।

विजय–इस समय तो बाल बाल बच गये नही तो जेलखाने की हवा खानी पडती।

धमलू—अजी बडी मुसीबत उठानी पडती।

जालिम–जेलखाने तकतो गनीमत था किन्तु वहातो जानके लाले थ , मगर यह बात मालूम न हुई कि महाराज वहा कैसे आये ?

विजय—इत्तिफाक की बात है, शायद सैरो शिकार के लिये पधारे होगे।

जालिम–तो क्या अब चुप होकर बैठ रहना चाहिये ?

विजय—नही अपनी इस पराजय को विजय मे बदलनेकी कोशिश करना चाहिये।

धम०—एक पाप छिपाने के लियं मनुष्य को हजार पाप करने पडते हैं।

जालिम—बीना कहा गई होगी, तुम्हारा क्या ख्याल है ?

विजय—महाराज जोधपुर के महल मे।

धम०—तो वहा तक किस की रसाई है ?

विजय—महाराज मेरी समझमे एक बात आई है।

जालिम—क्या ?

विजय—महाराज जोधपुर के महल मे एक सहेली है, जो बच मे मेरी कन्या के साथ बहुत खेली है। मै अच्छी त उसको जानता हू, यदि वह इस काम मे हमारी सहाय करे तो बस फिर पौबारह ही पौबारह है।

धम०—किन्तु वह ऐसा नीच काम करने को क्यो तय्यार होगी

विजय—पागल हो, सफेद भूत का लालच बुरा होता है, इस ठ डी आग है, अगर चादी की गरमी दी जाये, तो लो भी पिघल जाये, भला मनुष्य की क्या शक्ति है कि ज भी इसका ताव खाये।

जालिम—हा ठीक है जिस कदर रुपये की जरूरत हो, मेरे खजा से काम मे लाया जाये, मगर बीना को जरूर फसाय जाये।

विजय—जरूर।

धम०—हे ईश्वर! तू इन्हे नेक रास्ता दिखा नही तो इनकी मिट्टी ठिकाने लगा।

जालिम—अगर सहायता की जरूरत हो तो धमल्लू को साथ लेते जाओ।

विजय—महाराज आप पधारिये, देखते जाइये किस खूबी से बीना को लाता हू, किस चालाकी से इस हार को जीत

बनाता हूं और अपनी हुनरमन्दी के क्या क्या कर्तब दिखाता हूं।

जालिम—शाबास तुमसे ऐसी ही उम्मेद है। (जाता है)

विजय—धमलू! चलो आओ अब देर करने से क्या फायदा।

धम०—पहले मुझे बता दो कि किस तरकीब को अमल मे लाओगे, राज भवन के समीप जाकर कौनसा मन्त्र फूंकोगे, कौनसा जादू जगाओगे? ऐसा न हो कि लेने के देने पडे, मुफ्त मे दु ख सहने पडें।

विजय—जो वक्त पर काम आये वह औसान कहलाते है, आगे की फिक्र मे पडकर दिल मे समाई चालाकियो को छोडना नही, कभी कोशिश से मुह मोडना नही।

धम० – चलो आओ, सबेरे का भूला यदि साझ को घर आजाये तो उसे भूला नही कहते।

(जाने का विचार करते है अन्दर से गाने का शब्द सुनाई देता है)

दोहा— भौंरा लोभी फूल का कली कली रस लेय,
काटा लागा प्रेम का हेर फेर जिय देय।

विजय—यह क्या?

धम०—गाने का शब्द।

विजय—कहा से आया?

धम०—सामने से।

विजय—ठहर जा, जरा मालूम करे, कौन गा रहा है?

धम०—किन्तु तुम्हे इस पूछ पाछ से क्या लाभ, तुम कोई

दारोगा हो या जमादार, अजी छोड़ो ऐसी ः
पड़ने से क्या फायदा।

विजय—अक्लमन्दी और होशियारी का कायदा, देख ·
हुई इधर ही आ रही है, मुझे सन्देह होता है।

धमल्लू—कैसा ?

विजय—जिसकी तलाश मे हम जा रहे हैं, वह खुद ही
रहे है।

[सुन्दरी व

सुन्दरी का गाना

दोहा भौंरा लोभी फूल का कली कली रस लेय,
काटा लागा प्रेम का हेर फेर जिय देय।

मै इधर उधर ढूढत फिरत हारी,
खिदमतगारी, कैसी ख्वारी, बारी मैं हारी तोबा बारं
भारी लाचारी-कैसी तोबा है, लाचारी मै बेचारी

दोहा भाग्य दोष से हो गये गुण भी अवगुण धाम,
मार्ग दिखा विपता लई कहा भयो विधि बाम।

पाऊ कहा, ढूढू किसे, जाऊ कहां, हा हा हा,
इधर इधर

किधर जाऊं, कहा जाऊं, किधर ढूढू कहां पाऊ
पर्वत, नगर, ग्राम, गली, कूचा, नदी, नाला, तात्पर्य

प्रत्येक जगह देख डाला। जब कोई चला जाता है, फिर कब लौट कर आता है, गया हुआ माल भी कही पाता है ? समझाये कौन, कहे कौन, वहा तो वही सवाल है, जाओ और लकडहारे को ढू ढ कर लाओ, पता न निशान, जगह न मकान।

विजय—(स्वत) बात करती है तो मालूम होता है मानो ग्रामोफोन बाजे को चाबी लगाकर रख दिया है।

सुन्दरी—अजब हैरानी है, बडी परेशानी है, बस आज मालूम हो गया कि इसी तलाश मे हमारी जान जाती है।

धम०—यह औरत है या किसी डाक्टर की अल्टर्नेट बेटरी ?

विजय—चलत फिरत है या बायस्कोप के परदे की एक्टरी ?

सुन्दरी—हे ईश्वर ! तुम सहायता करो।

विजय—कभी तुमने भी सहायता का ध्यान किया है ?

थमलू—कभी तुमने भी नरक जाने का सामान किया ?

सुन्दरी—(चौंक कर) ऐ, उई, तुम्हें ऐडी चोटी पर से कुरबान करू, हाय हाय मेरा दिल धडक रहा है, एल्सोनिया क्लाक की भाति टिक टिक टिक कर रहा है।

विजय—उफ ओह, यह दिल की धडकन है या भूचाल ?

धम०—यारो यह औरत है या वबाल ?

सुन्दरी—मुझे वबाल कहता है नामुराद कङ्गाल, जरा मुँह सभाल, "मुह लगाई डोमनी गाये ताल बेताल"।

विजय—खफा न हो, खफा न हो, जरा शान्त हो, शान्त हो।

सुन्दरी—चोर के भाई गिरह कट, वाहरे नटखट, एक लगाये, एक

बुझाये, बस अलग हटो, रास्ता छोडो। (जाना चाहत

विजय—जाती हो, जरा हमारी बात तो सुनती जाओ।

सुन्दरी -नाक मे दम कर दिया, बोलो क्या कहते हो ?

विजय—तुम्हारे फायदे की बात।

सुन्दरी—कहो भी।

विजय - देख रही हो आज कल कैसा जमाना आ रहा है आदमी जो कुछ कर रहा है, वही खा रहा है। जि कोई कमाता है, उतना ही धन का लोभ बढता जाता क्यो धमलूसिह जी ?

धमलू—क्या कह रहे हो ?

विजय—अगर थोडी सी महनत से बहुत सा धन हाथ लगे क्या बुराई है ?

सुन्दरी—कुछ भी नही।

विजय—अस्तु हमारा भी है एक छोटा सा काम।

सुन्दरी—बस पैसे का सर अञ्जाम, फौरन ही पूरा हो काम।

विजय—पैसा, पैसा, पैसे का क्या जिक्र जितना चाहिये लो।

सुन्दरी—अच्छा अच्छा बोलो तो वह क्या काम है ?

विजय—महाराज जोधपुर के महल मे

सुन्दरी—हाँ हाँ महाराज जोधपुर के महल में एक स्त्री आई है।

विजय—बस, बस, वही वही वह हमारी भौजाई है, घर से भाग आई है।

सुन्दरी—अच्छा (मन मे) अब मालूम हुआ हजरतका

गरीब निर अपराध स्त्री और इनकी भौजाई, फिर घर से भाग कर आई ? (प्रकट) बस रुपये का इन्तिजाम हो, फिर फौरन तुम्हारा काम हो ।

विजय-किस तरह ?

सुन्दरी--जिस तरह से तुम कहो ।

विजय—यह लो एक शीशी, इसे सोते हुए आदमी की नाक पर लगा देने से उसे चार घण्टे तक होश नही आती, यह दवा इस बात में जरा भी चूक नही खाती ।

सुन्दरी—चीज तो बहुत अच्छी है, अच्छा फिर !

विजय—बस जब वह बेहोश हो जाये, तब उसको बक्समे बन्द करना, और नीचे लटका देना आगे हम समझ लेगे ।

सुन्दरी—मगर इनाम ?

विजय—अजी पहले इनाम फिर काम, यह भी कोई बात है, आओ हमारे साथ आओ, जो कुछ मागो सो पाओ ।

सुन्दरी--अच्छा चलो पधारो । [सबका जाना]

अंक ३ दृश्य २

तारा रण्डी का मकान

(माधोका प्रवेश)

माधो—ताँगा वालोकी हटो बचो, इक्के वालो की टख टख, मोटर की पो पो, दूसरी तरफ सायकाल की टुनटुनी

बुझाये, बस अलग हटो, रास्ता छोड़ो। (जाना चाह

विजय—जाती हो, जरा हमारी बात तो सुनती जाओ।

सुन्दरी -नाक मे दम कर दिया, बोलो क्या कहते हो?

विजय—तुम्हारे फायदे की बात।

सुन्दरी—कहो भी।

विजय -देख रही हो आज कल कैसा जमाना आ रहा ह आदमी जो कुछ कर रहा है, वही खा रहा है। जि कोई कमाता है, उतना ही धन का लोभ बढता जाता क्यो घमलूसिंह जी?

घमलू—क्या कह रहे हो?

विजय—अगर थोडी सी महनत से बहुत सा धन हाथ लगे क्या बुराई है?

सुन्दरी—कुछ भी नही।

विजय—अस्तु हमारा भी है एक छोटा सा काम।

सुन्दरी—बस पैसे का सर अञाम, फौरन ही पूरा हो काम।

विजय—पैसा, पैसा, पैसे का क्या जिक्र जितना चाहिये लो

सुन्दरी—अच्छा अच्छा बोलो तो वह क्या काम है?

विजय—महाराज जोधपुर के महल मे

सुन्दरी—हॉ हाँ महाराज जोधपुर के महल में एक स्त्री आई है

विजय—बस, बस, वही वही वह हमारी भौजाई है, कमबख घर से भाग आई है।

सुन्दरी—अच्छा (मन मे) अब मालूम हुआ हजरतका का

गरीब निर अपराध स्त्री और इनकी भौजाई, फिर घर से भाग कर आई ? (प्रकट) बस रुपये का इन्तिजाम हो, फिर फौरन तुम्हारा काम हो ।

विजय–किस तरह ?

सुन्दरी—जिस तरह से तुम कहो ।

विजय—यह लो एक शीशी, इसे सोते हुए आदमी की नाक पर लगा देने से उसे चार घण्टे तक होश नही आती, यह दवा इस बात में जरा भी चूक नही खाती ।

सुन्दरी—चीज तो बहुत अच्छी है, अच्छा फिर !

विजय—बस जब वह बेहोश हो जाये, तब उसको बक्समे बन्द करना, और नीचे लटका देना आगे हम समझ लेगे ।

सुन्दरी—मगर इनाम ?

विजय—अजी पहले इनाम फिर काम, यह भी कोई बात है, आओ हमारे साथ आओ, जो कुछ मागो सो पाओ ।

सुन्दरी—अच्छा चलो प्यारो । [सबका जाना]

अंक ३ दृश्य २

तारा रण्डी का मकान

(माधोका प्रवेश)

माधो—ताँगा वालोकी हटो बचो, इक्के वालो की टख टख, मोटर की पो पो, दूसरी तरफ सायकाल की टुनटुनी

मोटरसायकल के हार्नकी किरकिर सुनकर कमेटी
बनाई पटरी यानी फुटपाथ का रास्ता लिया, मगर व
भी चैन नही, जरा किनारे पर चले कि ट्राम गाडी बल
नागहानी बनकर नाजिल हुई। डोली वाले, पालकी वा
नामझाम वाले, गर्ज किस किस को गिनाऊ, कहा त
बताऊ, नाक में दम आ गया, रास्ता चलना दुश्व
हो गया। खुदा खुदा करके घर तक पहुचे, हम ऊप
और दम नीचे। हा हा हा हा आज तो खुदाने बचाय
वरना मरने मे शक ही क्या था।

[हीराका प्रवेश]

हीरा—कहो उस्ताद किस हाल मे खडे हो क्या किसीसे लडे हो

माधो-बस मैंने कह दिया मुझसे न बोलो, मैं अपनी जान से आरी हू।

हीरा—(मन में) मालूम होता है उस्ताद आज बहुत खफा हैं शायद अफीम का अटा और दूधका बटा अभी नही मिला, (प्रकट) ऐसी नाराजगी अच्छी नही मै भी तो सुनू कि कैसी स्वारी है, क्यो तुम्हे अपनी जान भारी है।

माधो—बस कह दिया अब ज्यादा कुछ न कह, चुप रह, मै आज बहुत नाराज हूं।

हीरा—आखिर किसपर ?

माधो—तागे वालोपर, इक्के वालोपर, मोटर वालो पर, सायकल वालोपर और सबसे बढकर कमेटी वालोपर।

हीरा—कमेटी वालो पर, यह क्यो उस्ताद यह क्यों ?

माधो—अगर यह कमेटी वाले तागे, यक्के मोटर वग़ैरा वग़ैरा वालो को लाइसन्स न देते तो रास्ता चलने वाले क्यों मुसीबतमे पडते, और हटो बचो हटो बचो के दुःख सहते।

हीरा—अगर तागे वालोके पास लाइसन्स न होता तो बताओ कि तुम्हारी बाई जी अगर कही नाच मुजरे मे जाती तो क्या तुम्हारे सिरपर बैठ कर जाती।

[बुद्धू दूसरा मारगिया आता है]

बुद्धू— घर में झाडू है न सफाई, या इलाही ! यह कैसी तबाही ? नालायक, एक दम नालायक, किसी को इतना नहीं सूझता कि बाई जी एक नया पछी लाई हैं, आज उसके गले की चलत फिरत का इम्तिहान है। जाबे ओ हीरा ! अभी सक्के, धोबी, कुम्हार, मन्हार को बुलाकर ला, और नई बाई जी को नहला धुला, अच्छे २ कपडे पहना और इस अखाडे मे बुलाकर ला।

माधो—अरसे से सारङ्गीका पेट खाली है।

बु०–बहुत दिनो से जाली नोट बनाते बनाते तबीयत उकता गई, इतने दिनो के बाद आज कही तकदीर खुली है।

माधो—मानो सवालाख की थैली मिली है।

बु०—ओ मिया उस्ताद ! जाओ जरा अपनी सारङ्गी वारङ्गी ले आओ, गज के बालो को अफीम और तेल पिलाओ,

सारङ्गी के कान ऐंठ ऐंठ कर तारों को सुर मे
और नई बाई जी की बानगी दिखाओ।

माधो—अभी लो।

[जाता है, तारा बेला सहित आती है]

तारा-बेटा बैठो, यह अब तुम्हारा मकान है,बेटी तुम मेरी उ
हो। मै तो अब बूढी हुई इस मकान को मकान न
यह जाम जहानुमा है, यहा बैठे बैठे कुल आलम
होती है। हर एक कौम और वजा कता का आदम
नजर आता है। मेरी बेटी, तुम इन्ही लो
रिझाना, किसी से बात बनाना, किसी से म
जताना, किसी को दाम गेसूमे फसाना, गर्ज
लगाना, कही बुझाना, जिस तरह बने मेरी
रुपया कमाना। अगर आराम चाहो तो रुपया क
अगर नेकनामी चाहो तो रुपया कमाओ, अगर खु
मिलना चाहो तो रुपया कमाओ। अगर आदमी बे
है तो रुपये से, अगर ईमानदार है तो रुपये से।

हीरा—क्यो भाई बुद्धू देख रहे हो, बाईजी क्या सबक
रही हैं।

बु॰—सुनते जाओ क्या क्या सब्ज बाग दिखा रही है।

(माधो आता है)

तारा—अजी उस्ताद जी! यह अभी नादान है जरा गौर
गाना बताना।

माधो—बाई जी! आप बे फिक्र रहे, वह वह बाते बताऊ, वह वह पलेटे याद कराऊ कि सुनने वाले हजार जान से आशिक हो जाये।

बु०—और फिर बाईजी यह तो खुद होनहार है, जिस रोज से यह आई हैं थोडा थोडा शुगल जारी है, और खुदा की कस्म तारा बाई आवाज भी बहुत ही प्यारी है।

तारा—उस्ताद जी! आज सेठ गुनीचन्द, दुनीचन्द, उजागरमल, सागरमल कह गये थे कि रात को आवेगे, आते ही होगे लो बडी उमर, अभी याद किया और अभी दर्शन हुए।

(सेठ गुनीचन्द दुनीचन्द उजागरमल, सागरमल का आना)

गुनी०—तारा बाई मिजाज तो अच्छे है?

तारा—जी हा कहिये आपका मिजाज?

दुनी०—क्या पूछती हो जिस दिन से तुम्हारी केसर उस नाई वाले लफगे के साथ भागी है, हमारा तो मजा ही किरकिरा हो गया।

साग०—अजी बिलकुल सोहबत का लुत्फ ही उड गया।

उजा०—हमारो तो आख की तारा थी तारा।

गुनी०—और हमारी जिन्दगी का सहारा थी सहारा।

तारा—अजी छोडो भी उस मुई का नाम, भला नायन को आप जैसे रईसों की खू बू, चाल ढाल क्यो पसन्द आने लगी, जैसी थी वेसे से ही जा मिली। आप लोग जरा भी उसकी फिक्र न करे, मुई चुडेल का जिक्र ही न करें।

(बेला से) आओ बेटा सरोजिनी! इधर आओ, देखो, यह लाला उजागर मल हैं, इनके यहा लकडी का व्योपार है, यह शहर के बडे भारी साहूकार है। यह हैं लाला सागर मल इनके हा दिन रात बहुत से गरीब गुर्बाओ को खैरात मिलती है, सखावत मे हातिम की भी इनसे कन्नी कटती है, और यह लाला गुनीचन्द है, बेटी सरोजिनी राम जाने इनका स्वभाव बडा ही दाता है हजारो क्या बल्कि लाखो का इनके हा बही खाता है। सूद में माल को दबा लेते हैं, और असल की डिग्री करा लेते है। और यह हैं लाला दुनीचन्द, चन्दन के दरख्त की भाति इनका प्रभाव है, परोपकार करना इनका स्वभाव है। आओ आओ मेरी बच्ची! न शरमाओ, ये कुछ गैर थोडा ही है, ये तो अपने हैं अपने।

दुनी०—शरमाई जाती हैं।

साग०—कमल के फूल की तरह मुर्झाई जाती हैं।

उजा०—अजी कुछ दिनो को शर्म और है, जब जरा ताराबाई ने लासे पर लगाया तो देखना क्या से क्या हुई जाती है।

गुनी० क्यों नहीं-"होनहार बिरवाके चिकने चिकने पात"।

तारा—बेटा आओ, जरा लाला जी के करीब आओ।

गुनी०—आयेंगी आयेंगी मगर अभी शरमाती हैं।

साग०—हा जी हा जरा लजाती हैं।

तारा—बेटा सरोजिनी ! गाओ कोई चीज गाओ, सुनाओ उस्ताद जी ! रसिक लोगो को कोई गाना सुनाओ ।

बेला का गाना ।

घर वह दुश्मन के गया राह से फिर कर उलटा,
तेरी किस्मत ने दिला तेरा मुकद्दर उलटा ।
मेरे मकसूम ने मकसूम का दफतर उलटा,
मेरी तकदीर ने टकदीर का अख्तर उलटा ।
मुन्सिफी तुम पर ही ठहरी है बताओ तो सही,
तुम मिलो गैर से इलजाम हो मुझ पर उलटा ।
बानिये जोरो जफा कत्ल के मूजिब हाय,
दादख्वाह उनसे ही हिले मुजतिर उलटा ।
हिज्र की शब मे तेरी आह ने 'जन्नत' कैसा,
तख्तये चर्ख सितमगर को सरासर उलटा ।

गुनी०—वाह वा, गाते गाते जब गन्धार का सुर लगाती है, तो मालूम होता है कि कोई गधा मुजस्सिम ढेंचू ढेंचू कर के सुर लगा रहा है ।

दुनी०—मध्यम सुर की तान, वाह वा, भई सागरमल क्या कहना, मालूम होता जैसे कोयल आम की डाल पर चहक रही है ।

तारा—सलाम कर बेटा सलाम कर सलाम ।

बेला— (सलाम करती है)।

साग०—हम तुम्हारे गाने से बहुत आनन्दित हुए, यह ‹
रुपया उपहार । यदि इसी तरह तालीम जारी र
थोड़े दिनो मे तुम्हारे दिन फिर जायेंगे।

उजा०— (मन मे) हाय हाय रण्डी का द्वार और सौ
उपहार। साथ बैठने वाले ने चादी की छुरी से
काट डाली, अच्छा दो सौ रुपया दू, क्यो नही क्यो
(रुपया देता हुआ) यह दोसौ रुपया लो बाई और
महनत से याद करो।

माधो—हमे कोई पूछता ही नही,क्या किसी को सूझता ही न

बु०—धनवानो की खैर, बच्चे जीते रहे, कुछ हमारे नशे पानी
भी हुक्म हो जाये।

हीरा—लाला जी ! चढती बढती रहे कुछ हमे भी दूध के वा
मिल जाये।

गुनी०—वाह वा, उस्ताद जी खूब सिखाया है।

माधो— वाह वा, वाह लाला जी वाह !

बु०—वाह वा से पेट भरो, इसी वाह वा को ओढो इसी ‹
बिछाओ।

दुनी०— लो उस्ताद बुद्धू ! यह तुम्हारी सारङ्गी की न्योछावर।

गुनी०—यह तुम्हारे राग भरे सारगी के गज की न्योछावर।

माधो—वाह वा दाता लोगो ! ईश्वर तुम्हारा भला करे ।

हीरा—गरीब लोग आखिर ऐसे ही ऐसे दाता लोगो से पलते है

सागर—अच्छा लो बाई जी अब चलते चलाते तुम्हारी जबान से भी कोई चीज सुनवा दो।

उजा० बात यह है कि गाने के साथ कुछ हाथ पैर भी हिलाओ फिर जो कुछ मागो सो पाओ।

तारा-बहुत अच्छा लालाजी सुनिये। (गाना)

नैना चुराये कहा जाते हो यार
इसी का नाम मुरव्वत है क्या सितम परवर,
कि तुम तो चैन करो हम रहे यहा मुजतर।
वफाका वादा किया था तो क्या इसी मुहपर,
कि दिल को लेते ही तुमने बदल लिये तेवर।
नैना चुराये०
मुझे तुम्हारे ही इस रूये पुरजिया की कसम,
तुम्हारे कदमकी और चश्म पुर हयाकी कसम।
और अपने जानोजिगर दिलके मुद्दआकी कसम।
मिटा हुआ हू तुम्ही पर मुझे खुदा की कसम।
नैना चुराये०
तुम्हारे तीरे नजर का शिकार मैं भी हू,
फिदा जो तुम पर है परवाना वार मैं भी हू।
तुम्हारा कैसरो महजूरो जार मैं भी हू।
निगाह लुत्फ का उम्मेदवार मैं भी हू,
नैना चुराये०

(चोबदार का प्रवेश)

चोबदार—तारा बाई ! तुम्हे दरबार मे बुलाया है।

माधो—दरबार मैं बुलाया है ? अररररर बापरे मैं तो पहले जानता था, हाय अल्लाह अब क्या होगा।

तारा—दरबार मे भई क्यो बुलाया है ?

चोबदार—हमारे महाराज के यहा जल्सा है, ठीक आठ बजे जाना, देखो देर न लगाना।

तारा—नही नही, आप कुछ फिक्र न करे। अरे बुद्धू, हीर ओ हीरा ! पान ला पान, बैठिये बैठिये।

चोबदार—हमे पान की कुछ जरूरत नही है, बैठने की फुरस नही है।

तारा—आप बे फिक्र रहे (चोबदार गया) उस्ताद जी ! जर हीरालाल के हा जाना और मोतीलाल के हा से मेर मोतियो का हार लेते आना। हा, जाते जाते सोनामल सुनार के हा जाना और सरोजिनी की चूहे दन्तिया भी लेते आना। अजी और सुनते जाओ, ज़रा पण्डितजी के हा से थोडी देर के वास्ते मोटर गाडी भी मागते लाना।

माधो—महफिल बरखास्त, बाई जी आप तैयार हो, मै अभी गया और मोटर मे बैठकर आया।

(जाता है, सेठ लोग भी जाते है)

अंक ३ दृश्य ३

राज-महल

(बीना और सुन्दरीका प्रवेश)

बीना—क्यो सुन्दरी कुछ पता लगाया ?

सुन्दरी—हा बाई जी बडी मुश्किल से, केवल पता ही नही लगाया, बल्कि जहा वह कैद है वह कैदखाना भी देख पाया और यह अशर्फियोका तोडा इनाम मे पाया ।

बीना—इनाम, इनाम कहा से पाया ?

सु०—बाईजी लालच बुरा होता, यदि आप सहायता करे तो यह तोडा हजम होता हैं।

बीना—मेरी सहायता से ?

सु०—हा बाई जी आपकी सहायता से ।

बीना—किस तरह ?

सु०-विजयसिंह

बीना-हा विजयसिह, जालिम, धमल्लू।

सु०-हा हा वही धमल्लू, मुझे बाजार में मिले । विजयसिह मुझे जानता है, उसके द्वारा मालूम हुआ कि वे लोग आपकी फिक्र मे रात दिन राजमन्दिर के गिर्द चक्कर लगाया

करते है, जब अन्दर नही जाने पाते है, कलपते है रोते हैं और वापिस चले जाते है। आज कही मुझे बाजार मे देख पाया, बडी खुशामद की और धन का लालच दिखाया।

बीना-हा हा फिर ?

सु०-फिर बाईजी मुझे घोर जगल मे ले गये ?

बीना-फिर क्या हुआ ?

सु०-जालिम सिह छुरी लिये खडा था, मै उसकी बात मानलू इसी पर अडा था।

बीना-वह क्या चाहता था ?

सु०—यही कि मैं तुम्हे राजमन्दिर से भगा दू और वहा तक पहुचा दू। यह एक तेल की शीशी दी कि रातके समय तुम्हारी नाकमे लगा दूं, और बक्स मे बन्द करके तुम्हे कोठे से नीचे लटका दू।

बीना—ओ हो यह धोकेबाजी! अच्छा फिर क्या हुआ ?

सु०—बस बाई जी! फिर मैं क्या करती, मुझसे जबरदस्ती इकरार कराया, जिसके बदले यह अशर्फियो का तोडा इनाम पाया।

बीना—अच्छा तो तू अब क्या कहना चाहती है ?

सु०—मेरी इच्छा बाई जी! परमात्मा के लिये तुम जरा बाक्स मे बन्द होकर महल से नीचे लटको तो हजार अशर्फियों

का दूसरा तोडा उनसे झटकूं।

बीना—हां अच्छा लटकती हूं, मगर जा पहले जरा महाराज को राजभवन में बुला ला। जा ज़रा जल्दी जा, है तू अभी तक नहीं गई?

सु०—ऊं ऊं ऊं।

बीना—अरे यह ऊं ऊं कैसी?

सु०—पहले तुम वचन दो कि लटकूंगी।

बीना—हाँ हाँ लटकूंगी, लटकूंगी, लटकूंगी।

सु०—तो बस फिर तो पौबारह, (जाते जाते) हजार का तोडा और झटकूं गी। (गई)

बीना—(मन में) ईश्वर ने इतने दिनों के बाद सुन पाया, यदि इस बार जालिमसिंह, विजय और धमल्लू को दण्ड न दूं, अपने पिता और बहन का बदला न लूं, तो जीतेजी चैन न पाऊं, नरक में जाऊं। अब एक बार और अपनी खुशी से जालिमसिंह के पास जाऊंगी, और अपने हाथों से जालिमसिंह को गिरिफ्तार करके लाऊंगी। जाऊं और वस्त्र बदल कर आऊं।

(बीना जाती है, महाराज सुन्दरी के साथ आते हैं)

महा०—तो तूने स्वयं अपनी आंखों से देखा?

सु०—हां महाराज, बड़े मोटे लोहे के कड़े जंजीर सहित उनके

हाथों में पड़े हुये थे, और वह कैदखाने के द्वार पर हुये थे।

महाराज—ओफ मेरे राज्य में ऐसा अत्याचार? चोबद चोबदार !! (चोबदार आता है) जा, और सेनापति मेरे रूबरू बुलाकर ला। (बीना आती है) बेटा! तुम्हारे पति की दुर्दशा सुन कर बहुत चिन्तित हुआ जाओ तुम घर मे बैठो, मैं अभी सेनापति को भेजकर अत्याचारियो को पकड़वा मगाता हू।

बीना—महाराज! आप मुझे आज्ञा दीजिये, मैं स्वय जाकर उन पकड लाऊ गी, और आपसे यथोचित दण्ड उन दिलवाऊ गी।

महा०—नहीं यह काम स्त्रियो का नही।

बीना—यदि सेनापति उनकी गिरिफ्तारी के लिये जायेगे, मेरे पति के अवश्य प्राण जायेगे। डाकू यह समाचार सु कर उनको कभी जीवित न छोडे गे। आप यह खेल मे इच्छा पर छोड दीजिये, अलबत्ता मेरी सहायता के लि सेनापति तथा दूसरे लोगो को आज्ञा कीजिये।

(सेनापति का प्रवेश)

महा०—देखो सेनापति जी! जिस समय यह लड़की आपसे सहायता मागे, इसकी आज्ञा पालन करना, हर तरह इसकी दिल जूई करना।

बीना—ले सुन्दरी तू बक्स ला, उसमें मुझे सुला और नीचे लटका। सेनापति और दस मनचले अफसरों को साथ लेकर तू शीघ्र ठिकाने पर पहुंच जा, देखूं तो आज क्योंकर बदमाश बचकर जाते हैं। (सब जाते हैं)

ट्रान्सफर

(बालाखाने की एक दीवार, खिड़कीमें से सुन्दरी झांक रही है, विजयसिंह का आना और सुन्दरी का आहिस्ता २ बक्स नीचे लटकाना, विजयसिंह का बक्स उठाकर भाग जाना)

अंक ३ दृश्य ४

कट जङ्गल

(सेनापति सुन्दरी की बतलाई जगह पर अपने आदमी तैनात करता है सुन्दरी विजय जालिमसिंह और धमलू के साथ आती है)

सु०—हां जी विजयसिंह ! जरा जल्दी करो मैंने कर दिया अपना काम, अब दिलवाइये इनाम।

विजय—इनाम की तुम्हें बहुत जल्दी है, मिल जायेगा इनाम, पहले पूरा तो हो लेने दो काम।

सु०—काम तो तमाम हो चुका ऐ नेकनाम ! बस जल्दी निकालिये, मेरे इनाम को खटाई में न डालिये।

जालिम—ओ हो बडी बे ऐतबार औरत है, ले पहले अप
इनाम, देख मगर एक बात का ध्यान रखना, मे
नसीहत पर कान रखना, अगर यह बात किसी के सा
कभी जबान पर लायेगी, तो सिर पर हाथ रख
रोयेगी, पछतायेगी —

बची रहना मेरे कहरो गजब की बाद सरसर से,
कभी भूले से तू कीना तलब होना न अजदर से।
लबों पर मुहर खमोशी लगाओ याद दिलबर से,
शिकायत कुछ फलक की हो न कुछ शिकवा मुकद्दरसे
जरा सी भी खिलाफे हुक्म गर जुम्बिश जबा होगी
खुदा जाने जबा होगी कहा नन्हीसी जा होगी।

सु०—नही सरकार, भला मुझमे यह शक्ति कहा कि आपके विरुद्ध एक शब्द भी किसी के रूबरू जबान पर लाऊ, यदि यह भेद किसी को बताऊं तो ईश्वर करे कि मैं इतनी ही बडी मर जाऊ।

विजय—हा हां तू हमारी गुप्त बातो से माहिर है, इसलिये तेरा नेक बद खुद तुझ पर जाहिर है।

सु०—सरकार अब यदि आज्ञा पाऊ तो अपने घर चली जाऊ?

ज़ालिम—हा जा, अब तेरा कुछ काम नहीं रहा।

(सुन्दरी जाने के बहाने सायड में छिप जाती है)

जालिम—(विजय से) बस अब क्या सोच विचार है, जा बक्स खोल कर उसे घसीटता हुआ यहां ला, मेरी होकर

रहने के लिये मजबूर करूंगा, अगर न मानेगी तो उसके शीशे नामूसके चकनाचूर करूंगा। हाँय तू अभी तक नही गया क्या डरता है ?

विजय—हा डरता हू।

जालिम—डर किसका डर ? विजय आज एक नया शब्द तुम्हारी जबान से निकलता है।

विजय—महाराज ! यह आपका दास दुनिया की डरावनी से डरावनी वस्तु से भय खाने वाला नही, बडे बडे राक्षसो से सेवक का हृदय दहलने वाला नही।

जालिम—परन्तु ?

विजय—सती स्त्री का सतीत्व।

जालिम—सतीत्व सतीत्व, बस सतीत्व उसी वक्त तक कायम है, जब तक गैर मर्द की आख नही पडती, तबीयत नहीं बिगडती।

विजय—मगर मालूम भी है इसका परिणाम ?

जालिम—कैसा परिणाम, कैसा अजाम, हर एक बडे काम मे तू ने मेरा हाथ बटाया, हर गाढे वक्त मे आडे आया, उस समय यह ज्ञान तेरे ध्यान मे न समाया ?

विजय—समाया, और जरूर समाया मगर

जालिम—मगर धन के लोभ ने उस ज्ञान की आग पर पानी डाल कर उसको ठंडा बना दिया था।

विजय—नही यह बात नही, अज्ञानता वश किये हुए पापो का

प्रायश्चित या कुफारा करनेपर वह सब अपराध क्षमा योग्य हैं।

ज़ालिम—तो तू ने बेला पर अत्याचार करने का प्रायश्चित व किया ?

विजय—किया नहीं करूंगा।

जालिम—कब ?

विजय—अभी तुम्हारे सामने।

जालिम—किस तरह से ?

विजय—अपने प्राण देकर—

मैं अपने खू की मेहदी उसके हाथों मे लगाऊंगा,
मैं मर जाऊ तो मर जाऊ मगर उसको बचाऊंगा।

जालिम—नमक हराम, अपने ! स्वामी से ऐसा बेहूदा कलाम।

विजय—काम में अन्धे होकर मेरी शिक्षा को बेहूदा बनाते हो, क्यों शर्म के मारे डूब कर नही मर जाते हो।

जालिम—मालूम हुआ, समय से पहले तुझे अपनी मौत की मुश्ताकी है, जो ऐसी बेबाकी हैं। ओ नमक हराम, देख अपनी बद कलामी का अंजाम।

[विजयपर आक्रमण करना चाहता है, बाना पिस्तोल ताने हुए आती है उसे देख कर जालिमसिंह के हाथसे खड्ग गिरता है सिपाही आकर जालिम, धमल तथा विजय को गिरिफ्तार करते हैं]

बीना—क्यो ओ सर्कश गुलाम ! देख लिया अपने अत्याचार का

परिणाम, रो और सिर झुका, सृष्टिकर्ता के सामने अपने अपराधों की क्षमा के लिये सिर झुका, और शेष आयु अच्छे कामों में लगा।

जालिम—बीना! अगर मेरे नमक हराम सहायको की नमक हरामी स तुझे मौका मिल गया तो क्या हुआ, अभी और वक्त बाकी है, जिसकी दिल को मुश्ताकी है।

बीना—अभी बाकी है?

जालिम—यह तो तू जानती होगी।

बीना—बेशक।

जालिम—भला क्या?

बीना—तेरी मौत का समय।

जालिम—अभी दूर है।

बीना—मेरे एक शब्द पर तेरे जीवनका आधार है, तेरे इकरार या इन्कार पर बेडा पार है।

जालिम—मगर मैं जानता हूं कि तू ऐसा हरगिज नही कर सकती।

बीना—क्यों?

जालिम—यू कि तेरी प्यारी से प्यारी वस्तु अभी मेरे कब्जे मे मौजूद है।

सुन्दरी—चलो बाई जी पहले उनको छुडा लाय, फिर महाराज से इनको दण्ड दिलवाये।

बीना—सेनापति तुम इनको दरबार मे लेकर हाजिर हो मैं भी आती हू। [प्रस्थान]

अंक ३ दृश्य १

रास्ता

[सेनापति तथा जालिमसिंह का प्रवेश]

जालिमसिंह–मैं समझता हूं कि तुम बहादुर हो।

सेनापति–निःसन्देह।

जालिम–मैं यकीन करता हूं कि तुम बहादुरों के साथ बरतने के तरीके भी जानते होगे।

सेनापति–क्यों नहीं।

जालिम–अस्तु अगर तुम बहादुर हो और बहादुर के साथ बरतावके तरीके भी जानते हो तो मैं तुमसे तुम्हारी बहादुरी के नाम पर एक दरख्वास्त करता हूं।

सेनापति–वह क्या ?

जालिम–रिहाई।

सेनापति–असम्भव।

जालिम–इस थोडी सी महरबानी के बदले मैं तुमको मालामाल कर दूंगा, बिस्तरे खाक से उठा कर चौथे आसमान पर पहुंचा दूंगा, तुम्हारी इज्जत और आबरू में चार चांद लगा दूंगा। हां यह भी शायद तुम जानते होगे कि मैं कौन हूं ?

सेनापति–जानता हूं, एक अभिमानी सरकश डाकू को कौन

नहीं जानता, एक हत्यारे अत्याचारी कुकर्मी को कौन नही पहचानता ?

जालिम—खैर जो कुछ समझो, मगर मै दौलतमन्द तो जरूर हू, तुम्हे गरीबी से निकाल कर अमीरी के ऊचे मरतबे पर पहुचा सकता हू।

सेनापति—जालिमसिह ! व्यर्थ यत्न न करो, मेरे चुगल मे फस कर तुम भाग नही सकते। इस तरह बेईमानी से पैदा की हुई दौलत कितने दिन तक मेरे पास रहेगी। दौलत और उसके मोह का परिणाम कारू की कब्र पर जाकर मालूम करो, जो जबान हाल से कह रही है कि दौलत ईमान के सीधे मार्ग पर जाने वाली गाडी के रास्ते मे एक गिरा देने वाला ककर है —

है समर बस रु सियाही इसकी चाह का,
डूबना है भरके ही बेडा गुनाह का।

जालिम—वह दौलत है जो बढकर है यहा सारी खुदाई से,
बदल जाती है, दुनिया यक कलम इसकी जुदाई से।
यहा तौकीर है, इज्जत है, राहत हैं वहा पर भी,
कहा सच है, खुदा रहता है खुश इसके फिदाई से।
अरे नादान ! यही हाजत रवा दोनों जहा की हैं,
इसी से ही भलाई सब यहा की और वहा की है।

सेनापति—इस उपदेश के पिटारे को खामोशी के सन्दूक मे बन्द

करो, यहा ईमानदारी का लोहा दौलत की आग से गलने वाला नही। (सिपाहियों से) जाओ ले जाओ, हथकड़िया पहनाओ और रात भर कैद खाने की हवा खिलाओ। सवेरे राजसभा मे पेश किया जायेगा और अपने किये का दण्ड पायेगा।

—(◆◆◆◆)—

अंक ३ दृश्य ६

जोधपुर का दरबार

[नृतकाओं का गाना]

जग मे हमेशा हमेशा शाह जीशान, तिहारी रहे आन बान,
बरतर सबसे आला है सुलतान, जग मे हमेशा आन बान,
शाह वाला वाला तोरी शान, नगर२ डगर२ तोरा है फरमान
सरकार तू सरदार तू मुख्त्यार तू जरदार तू मै कुरबान,
जग मे हमेशा हमेशा

राजा—कहिये सेनापति जी! वह डाकू आपके हाथ आया, गौहरे मुराद पाया?

सेनापति—हा श्रीमान! आप के इकबाल से उस दुष्ट का सेवक गिरफतार कर लाया, आज्ञा हो तो सभा मे उपस्थित किया जाये।

राजा—अवश्य ।

[सेनापति का जाना, चोबदारका आना]

चोबदार—श्रीमान ! महाराज रायसिंह पधारे हैं और बारयाबी की आज्ञा चाहते हैं ?

राजा—प्रधान जी ! जाओ ठाकुर साहिब को सादर सभा में लाओ ।

[प्रधान रायसिंहको लेकर आता है]

राजा—कहिये ठाकुर साहिब मिजाज तो अच्छे हैं ?

रायसिंह—परमात्माकी दया और आपकी दुआ है ।

राजा—कहिये किस तरह तकलीफ उठाई ?

रायसिंह—महाराज अफसोस मैं लुट गया, मेरे साथ बडा धोका किया गया, वह दुष्ट जालिमसिंह

[सेनापति जालिमसिंहको हथकडी लगाये लाता है]

जालिम—(स्वत) कौन रायसिंह ? बस अब रहा सहा जिन्दगीका सहारा भी उजड गया ।

राय—यही है वह खाना खराब, जिसके कारण मुझ पर नाजिल हुए सारे अजाब ।

राजा—हा तो फरमाइये इसने क्या किया ?

राय—मेरे घर पर आया, और एक नीच बागबान को जोधपुर का राजकुवर बना कर लाया, मुझे धोका दिया, और मेरी कन्या का विवाह उससे कराया, और मालूम नही उसके साथ क्या २ सुलूक किया, मुझे अभी तक उस का समाचार नहीं मिला ।

राजा—बस ठाकुर साहिब आप बैठ जायें, और शांत भाव से यहा की कार्यवाही देखते जाये। क्यों जालिमसिह! क्या यह बयान दुरुस्त है ?

जालिम—जो हा।

[चोबदारका प्रवश]

चाबदार-महाराज! श्रीमती राजदुलारी बीना दरबार मे पधारी है।

(बीना तथा लकडहारे का प्रवश)

राजा—आओ प्यारी राजदुलारी आओ, कहो तुम अपने पति को छुडा लाई ?

बीना—हा महाराज, (लकडहारे से) स्वामी! सामने आओ और महाराज को वह चिट्ठी दिखाओ।

रायसिंह—कौन मेरी बेटी बीना!

बीना—पिता जी!

राय—तेरा पति लकडहारा ?

बीना—नहीं पिना जी लकडहारा नही मेरे भाग्य का सितारा, शाही लकडहारा।

राय—शाही लकडहारा ?

बीना—हा पिता जी! आश्चर्य न कीजिये, जो कुछ हडिया मे है डोई में आता है, अभी सारा हाल खुला जाता है।

[लकडहारा राजा को पत्र देता है]

राय—(पत्र पढ कर और सिहासन से उतर कर लकडहारे को गले लगाते हुये) मेरा खोया हुआ रत्न, मेरी आखोका

तारा, मेरी किस्मतका सहारा !

राय—महाराज ! यह क्या भेद है ?

राजा—आज इतने दिनो बाद मैं ने इसका पता पाया, मानो गंगा नहाया, सोलह वर्ष के पश्चात गौहरे मुराद हाथ आया, अपनी गर्भवती स्त्री के बनवास के बाद आज इस का सुन्दर मु ह देखने मे आया ।

राय—तो क्या आपका पुत्र राज्य का अधिकारी ?

राज्य—हा ।

सब दरबार—मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो !

राजा—आओ मेरे बच्चो ! मैं तुम्हें अब अलग नही देख सकता, चोबदार पंडित को बुलाओ, और जाओ दरबार मे किसी गाने वाली को भी बुला लाओ ।

[प डित आता है लकडहारे को युवराज पद दिया जाता है, तारा रंडीका सरोजिनी सहित प्रवेश]

गाना

रकीबो को सौ बार अगर देख लेना
हमें भी सनम इक नजर देख लेना ।
लगाओ तो तुम अपने हाथों से चन्दन,
रहेगा न या दर्द सर देख लेना ।
यह चुटकी में गुन्चा है या दिल है मेरा,
मसलते तो हो तुम मगर देख लेना ।

कुछ आखो ही आखों में कह दू गा मैं भी,
जरा चुपके तुम पर इधर देख लेना ।
चले जाओगे तुम जो पहलू से उठ कर,
हमारा भी होगा सफर देख लेना ।

सेनापति—महाराज ! जालिमसिंह के वास्ते क्या आज्ञा है ?

राजा—मेरी इच्छा है कि इसका फैसला स्वयम् बीना ही करे ।

बीना—झुकाओ, जालिमसिंह अपनी खताओंके सामने सिर झुकाओ, ईश्वर के सामने शरमाओ ।

जालिम—वह जिसने हमेशा गुरूर और नखवत की गोद मे परवरिश पाई हो शरमाये ? वह जिसने बडे बडे सर कशों के सिर झुकाये, अब खुद सिर झुकाये, बस बहतर है कि ऐसी निर्लज्जता के बदले मर जाये ।

बीना—मेरी यह इच्छा है कि मरने के बाद तेरी आत्मा न शरमाये ।

जालिम—तुम्हारी यह मन्शा है कि जालिमसिंह मरने से पहले चिता मे जाये ।

बीना—नही, मेरा मतलब यह हे कि तू सीधे मार्ग पर आये।

जालिम—गैर मुम्किन है, भला क्यो कर कोई अपनी आदत बदल डाले ?

बीना—पुराने वस्त्र की तरह ।

जालिम—किस तरह अपनी खसलत को कुचल डाले ?

बीना—अपने शत्रु के सिर की तरह ।

जालिम—बीना ! क्यों मेरी बदजातियों की याद दिला दिला कर मेरे दिलके घाव हरे करती हो ? यह दिल वह दिल नही जिस पर तुम्हारी नसीहत कुछ काम कर सके, यह वह रोग नहीं जिसे काल के अतिरिक्त कोई दवा आराम कर सके।

(जालिमसिंह आत्म वेदना से विकल हो पिस्तौल मार कर अपघात करलेता है)

बीना-धमल्लू ! बोलो अब तुम्हारा क्या इरादा है ?

धमल्लू-बाई जी ! तोबा है, हरगिज़ हरगिज कोई बुरा काम न करूंगा, यदि अब की बार आप क्षमा कर देंगी तो सारी आयु हरि नाम जपा करूंगा ।

बीना-अच्छा जा तुझे क्षमा किया, क्योंकि तेरा स्वत किसीको सतानेका विचार न था तूने जो कुछ किया, जबर्दस्ती किया, [सरोजिनी (बेला) को दिखाकर] देखता है यह कोन है ?

धमल्लू-कौन है ? मेरे पाप कर्म की शिकार, यानी बेला जार निज़ार ? या किर्दगार ! मगर यह रंडी बनकर दरबार मे किस तरह आई ?

बीना-तारा इस को नदी किनारे से उठाकर लाई, क्या इस के ग्रहण करने में तुझे कुछ हील हुज्जत तो नहीं ?

धमल्लू—नहीं किन्तु सन्देह है।

बीना—सन्देह नि:सन्देह है, किन्तु मैं जामिन हूं कि इसका चरित्र आज तक गंगाजल की तरह बिलकुल निर्मल है

बेला! तुम्हारा धमल्लू हर तरह तुम्हारे प्रेमका पात्र और वफा शुआर है, तुम दोनो पति पत्नीकी भांति गुज करो और जीवन भर प्रेमके साथ बसर करो (हाथ मिला देती हैं)

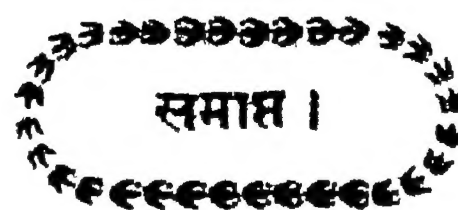
राजा-अच्छा आजसे गुजारे के लिये सरकार से तनख्वाह पाओगे, और जरूरत के वक्त याद किये जाओगे।

बीना-विजय! आओ, यद्यपि तुमने मेरी बहन के साथ बहुत बुराइया की हैं, किन्तु कल वाले प्रायश्चित्त ने तुम्हारे जीवन को सुधार दिया। आओ आज से मैं तुम्हे अपना भाई बनाती हू, और भाई विजयसिंह के नाम से पुकार कर तुम्हारा मान बढाती हूं।

विजय—(सिर झुकाकर) बहिन बीना! यह तुम्हारा नालायक भाई पिछली गलतियो पर शरमाता है, और हाथ जोड़कर क्षमा चाहता है।

बीना—ईश्वर तुम पर दया करे।

ड्राप



पेज १ से १६ हिन्दुस्थान प्रेस दिल्ली मे तथा पेज १७ से १४४ तक, राजेन्द्र प्रिन्टिङ्ग प्रेस, नया बाजार दिल्ली मे छपा।

जखमी हिन्दू नायक

